अनुक्रमणिका

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१५	राजगृहा	राजगृह
३	२२	श्राय	श्रायु
६	११	सूक्ष्म सम्प्राय	सूक्ष्म सम्पराय
१३	६	थोड़े	नहीं
१३५	६	लाभ	लोभ
१४१	१३	संख्यात गुणा	असंख्यात गुणा
४८	२	तीर्यक् लोक	तिर्यक् लोक
४९	११	उत्पन्न होते हुए	उत्पन्न होते हुए नरकायु भोगते हुए
५३	६	जाते हैं	जाते आते हैं
५६	१६	संख्यात गु	संख्यात गुण
५६	२१	दोनों	इन दोनों
७१	१	तिर्यक् लोक में	तिर्यक् लोक² में
७१	१३	अनन्न गुण	अनन्त गुणा
७३	१३	सख्यात गुणा	संख्यात गुण
७३	३	सख्यात गुण	संख्यात गुणा
७५	३	संख्यात गुणा	संख्यात गुण
८२	१३	मध्यक	मध्य
८३	६	पहले	(१, २, ४)
८४	२२	जीव	जीव
११०	५	सन्नी	सर्व
१२१	१४	अवगहना	अवगाहना
	१६	विभग ज्ञान कहना।	विभग ज्ञान कहना किन्तु मध्यम अवगाहना में त्रिस्थान पतित कहना।
१४८			
१६५	१४	छह महीने का	छह महीने का
१६५	१६	२३ अनम बहु	२३ चरम बहुत
१८०	२२	एगारसगया य	एक्कारसमो य
	३	संख्यात प्रदेशी	नो प्रदेशी, दस प्रदेशी यावत् संख्यात प्रदेशी

दो शब्द

जैनागमों में श्री भगवती सूत्र और पन्नवणा सूत्र का एक विशेष स्थान है। ये शास्त्र बड़े गहन हैं। इसलिए पूर्वाचार्यों ने इनको थोकड़े का रूप देकर भव्य जीवों पर महान उपकार किया है। थोकड़े शास्त्रों की कुञ्जियां कहलाते हैं। थोकड़े सीख लेने पर शास्त्रों का गहन से गहन आशय भी सरलता से समझ में आ सकता है और थोड़ी बुद्धि वाले व्यक्ति भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर हमने पन्नवणा सूत्र के ३६ ही पदों के थोकड़े छपवाने का विचार किया, किन्तु सभी पदों के थोकड़े उपलब्ध नहीं थे। अतः चिरंजीव जेठमल सेठिया ने इन थोकड़ों का संग्रह करना शुरू किया। हमारे अहोभाग्य से प्रातः स्मरणीय परम प्रतापी पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज साहब की सम्प्रदाय के सप्तम पट्टधर वर्तमान जैनाचार्य पण्डित रत्न पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती शास्त्रमर्मज्ञ पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० यहां विराजते हैं। आपको सैकड़ों थोकड़े आते हैं। इसी प्रकार बीकानेर श्रावक समाज में श्रीमान् हीरालाल जी सा० मुकीम थोकड़ों के बड़े अच्छे ज्ञाता हैं। आपको भी सैकड़ों थोकड़े आते हैं। इन दोनों महानुभावों के कण्ठस्थ थोकड़ों में से पन्नवणा सूत्र के कई पदों के थोकड़े लिखे गये। इस प्रकार इस सूत्र के ३६ ही पदों के थोकड़े लिख कर लिपिबद्ध कर लिये गये। फिर उस कापी के आधार पर प्रेस कापी तैयार करवाई गई। प्रेस कापी तय्यार हो जाने पर वह कापी फिर उपरोक्त मुनिश्री की नजर में निकलवाई गई। मुनिश्री ने बड़े ध्यान पूर्वक कापियों का अवलोकन किया और संशोधन करने योग्य स्थलों की सूचना की। तदनुसार उनका संशोधन कर दिया गया।

इस विषय में पण्डित मुनिश्री पन्नालालजी म० सा० ने जो परिश्रम उठाया है उसके लिए हम मुनिश्री के अत्यन्त आभारी हैं। इसी प्रकार

श्रावकवर्य श्रीमान् हीरालालजी सा० मुनीम ने कई थोकड़े लिखवाने की कृपा की है एतदर्थ हम उनका भी आभार मानते हैं।

चिरंजीव जेठमल सेठिया ने बड़ी लगन और रुचि के साथ परिश्रम-पूर्वक इन थोकड़ों का संग्रह किया है। आशा है धार्मिक ज्ञान के प्रति उनकी जो लगन और रुचि है वह उत्तरोत्तर वृद्धिगत होती रहे जिससे समाज को ज्ञान का अधिकाधिक लाभ मिलता रहे।

आजकल थोकड़े सीखने की रुचि कम होती जा रही है और पन्नवणा सूत्र के सब थोकड़े एक पुस्तक में छपे हुए नहीं मिलते हैं। इसलिए हमने इस सूत्र के सब पदों के थोकड़ों को छपवाने का निश्चय किया है जिनका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। आगे क्रमशः इसके और भाग भी प्रकाशित होते जाएंगे। आशा है जैन समाज इन थोकड़ों से लाभ उठाएगी।

बीकानेर
वि० संवत् २००८
ज्ञान पंचमी

निवेदक
भैरोंदान सेठिया

द्वितीयावृत्ति के सम्बन्ध में

संस्था की ओर से श्री पन्नवणा (प्रज्ञापना) सूत्र के थोकड़ों के तीन मारवाड़ी भाषा में प्रकाशित हुए थे । प्रथमावृत्ति समाप्त हो जाने पर, इन थोकड़ों की अधिक मांग होने से द्वितीय-संस्करण की आवश्यकता प्रतीत हुई । पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों के भागों पर हमें जो सम्मतियां प्राप्त हुई, उनमें कतिपय महानुभावों ने यह सूचना दी थी कि ये थोकड़े मारवाड़ी भाषा में न होकर राष्ट्रभाषा हिन्दी में होते तो सभी प्रान्त वाले इनसे समान रूप से लाभ उठा सकते थे । अतः पं. श्री रोशनलालजी चपलोत से श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों के तीनों भागों का अनुवाद एवं संपादन कराया गया । इस संस्करण में विषय को अधिक स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । इस कारण पुस्तक का कलेवर काफी बढ़ गया है ।

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों के प्रथम भाग के प्रस्तुत संस्करण की पांडुलिपि, हमारी प्रार्थना पर, परम प्रतापी पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज साहब की सम्प्रदाय के अष्टम पट्टधर परम पूज्य बाल ब्रह्मचारी जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री पंडित रत्न श्री नानालाल जी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती, दिवंगत स्थविर पद विभूषित जैनागम रहस्य वेत्ता शास्त्र मर्मज्ञ पंडित रत्न श्रद्धेय मुनि श्री पन्नालालजी महाराज साहब ने बड़े परिश्रम के साथ आद्योपान्त देखने की महती कृपा की है । आपके सूचनानुसार यत्र तत्र आवश्यक संशोधन भी कर दिया गया है । इस कृपापूर्ण सहयोग के लिए श्रद्धेय मुनि श्री के प्रति विनम्रभाव से कृतज्ञता प्रगट करते हैं ।

श्री पन्नवणा सूत्र का विषय अति गहन और दुरूह है । इस भाग में शास्त्रीय विषय को यथार्थ रूप से उपस्थित करने का हमने प्रयत्न

किया है फिर भी विषय विवेचन में त्रुटि भी हो सकती है। अतः सुज्ञ पाठकों से हमारी प्रार्थना है कि यदि वे इस भाग में तत्त्व सम्बन्धी त्रुटि या अन्य किसी तरह की कमी महसूस करें तो हमें सूचित करने का कष्ट करें ताकि आगामी संस्करण में सुधार किया जा सके। पाठकों की इस कृपा के लिए हम उनके आभारी होंगे।

प्रूफ संशोधन में पूरी सावधानी रखते हुए भी, खेद है कि इसमें कुछ अशुद्धियां रह गई हैं जो शुद्धि-पत्र में शुद्ध कर दी गई हैं। इनके अतिरिक्त कहीं कहीं मात्राएं और अक्षर, टाइप घिसे या टूटे होने से, छपाई में साफ नहीं उठे हैं जैसे ा, ि, ी, ु, े, ै, ो, ं, ँ, तथा क, फ, च, त, तु, थ, द, न, ता, प, पे, म, में, य, व, ष, रु, हैं, श आदि। किन्तु पूर्वापर सम्बन्ध के साथ पढ़ने से इनमें भूल होने की संभावना नहीं है।

बीकानेर
वि० संवत् २०२५ अक्षय तृतीया

निवेदक
जेठमल सेठिया

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों का प्रथम भाग

१—आर्य का थोकड़ा (पन्नवणा सूत्र प्रथम पद)

हे भगवन् ! आर्य के कितने भेद हैं ?

हे गौतम ! आर्य के दो भेद—ऋद्धि प्राप्त (इड्डिपत्ता) और अऋद्धि प्राप्त (अणिड्डिपत्ता)।

ऋद्धि प्राप्त आर्य के छह भेद—तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, चारण (जंघाचारण, विद्याचारण) और विद्याधर।

अऋद्धि प्राप्त आर्य के नौ भेद—१ क्षेत्र आर्य, २ जाति-आर्य, ३ कुल आर्य, ४ कर्म आर्य, ५ शिल्प आर्य, ६ भाषा आर्य, ७ ज्ञान आर्य, ८ दर्शन आर्य, ९ चारित्र आर्य।

क्षेत्र आर्य के भेद—भरत क्षेत्र में बत्तीस हजार देश हैं। इनमें से साढे पच्चीस आर्य देश हैं। शेष ३१९७४॥ देश अनार्य हैं। इन साढ़े पच्चीस आर्य देशों में रहने वाले क्षेत्रार्य हैं। आर्य देश और उनकी राजधानी के नाम इस प्रकार हैं:—

१—मगध देश-राजगृहा नगरी २ अंगदेश-चम्पानगरी ३ वंग देश—ताम्रलिप्ती नगरी ४ कलिंग देश—कंचनपुर नगर ५ काशी देश-वाराणसी नगरी ६ कोशल देश—साकेतपुर नगर ७ कुरुदेश-गजपुर नगर ८ कुशावर्त देश—सौरिकपुर नगर ९ पंचाल देश-कंपिलपुर नगर १० जंगल देश-अहिच्छत्र

नगरी ११ सोरठ देश-द्वारका नगरी १२ विदेह देश-मिथिला नगरी १३*वत्स देश-कोशाम्बीनगरी १४ शांडिल्य देश-नंदीपुर नगर १५ मलयदेश-भद्दिलपुर नगर १६ वत्स देश-विराटपुर नगर १७ वरण देश-अच्छापुरीनगरी १८ दशार्ण देश-मृत्तिकावतीनगरी १९ चेदि देश-शौक्तिकावती नगरी २० सिन्धु सौवीर देश-वीतभय नगर २१ शूरसेन देश-मथुरा नगरी २२ भंग देश-अपापापुरी नगरी २३ पुरिवर्त देश-मासानगरी २४ कुणाल देश-श्रावस्तीनगरी २५ लाटदेश-कोटिवर्षनगर २५½ ×आधा केकय देश-श्वेताम्बिकानगरी। इन आर्य देशों में तीर्थंकर, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव आदि का जन्म होता है।

---

* थोकड़ों के जानकार श्रावक (१३) कच्छदेश—कौशाम्बी नगरी कहते हैं। किन्तु शास्त्र के मूल पाठ में (१३) वत्स देश है अतः शास्त्रानुसार यहाँ 'वत्सदेश' रखा गया है।

× थोकड़े में आर्य देशों के गावों की संख्या भी कहते हैं जो इस प्रकार है—१ मगध देश —१,६६,००,००० गाँव २ अंग देश —५००,००० गाँव ३ वंग देश —१८,००,००० गाँव ४ कलिंग देश—२०,००,००० गाँव ५ काशी देश —१,९२,००० गाँव ६ कौशल देश—९९,००० गाँव ७ कुरु देश—८,७३,४२५ गाँव ८ कुशावर्त देश—१,४३,००० गाँव ९ पँचाल देश—३,८३,००० गाँव १० जंगल देश—१,४५,००० गाँव ११ सोरठ देश— ६,८०,५२६ गाँव १२ विदेह देश—८,००० गाँव १३ वत्स देश—(कोशाम्बी नगरी) २८,००० गाँव १४ शांडिल्य देश—२१,००० गाँव १५ मलय देश—[illegible] गाँव १६ वत्स देश—२,८८,००० गाँव १७ वरण देश—२४,००० गाँव। १८ दशार्ण देश—१८,००० गाँव १९ चेदि

जाति आर्य के छह भेद—१ अम्बष्ठ, २ कलिंद, ३ विदेह ४ वेदग, ५ हरित, ६ चुंचुण।

कुल आर्य के छह भेद—१ उग्रकुल, २ भोग कुल, ३ राजन्य कुल, ४ इक्ष्वाकु कुल, ५ ज्ञात कुल, ६ कौरव कुल।

कर्म आर्य अनेक प्रकार के हैं जैसे—कपड़े का व्यापार, सूतका व्यापार, कपासका व्यापार, किराणेका व्यापार, मिट्टी के वर्तनोंका व्यापार, सोने चाँदी जवाहरात का व्यापारआदि।

शिल्प आर्य के अनेक भेद हैं—दर्जी, जुलाहा, ठंठारा, चित्रकार, लेखक आदि विविध शिल्प करने वाले।

भाषा आर्य—जो अर्धमागधी भाषा में बोलते हैं और ब्राह्मी लिपि का प्रयोग करते हैं वे भाषा आर्य हैं।

ज्ञान आर्य के ५ भेद—१ मति ज्ञान आर्य, २ श्रुत ज्ञान आर्य, ३ अवधि ज्ञान आर्य, ४ मनः पर्यय ज्ञान आर्य, ५ केवल ज्ञान आर्य।

दर्शन आर्य के दो भेद—सराग दर्शन आर्य और वीतराग दर्शन आर्य।

देश—४२,००० गाँव २० सिन्धु सौवीर देश—६,८०,५०० गाँव २१ शूरसेन देश—८,००० गाँव २२ भंग देश—३६,००० गाँव २३ पुरिवर्त देश—५२,४५० गाँव २४ कुणाल देश—६३,००० गाँव २५ लाट देश—७,१३,००० गाँव २५½ आधा केकय देश—१,२६,००० गाँव। केकय देश में कुल २,५८,००० गाँव हैं। १,२६,००० गाँव अनार्य हैं और १,२६,००० गाँव आर्य हैं, इनमें ७,००० गाँव खालसे हैं।

सराग दर्शन आर्य के दस भेद—

१ निसर्ग रुचि—बिना किसी उपदेश के स्वयमेव, जातिस्मरण आदि ज्ञान से, जिन भाषित जीवादि तत्त्वों पर 'ये इसी प्रकार हैं अन्यथा नहीं हैं' इस प्रकार श्रद्धा करना।

२ उपदेश रुचि—छद्मस्थ अथवा जिन भगवान् का उपदेश सुनकर जिन भाषित तत्त्वों पर श्रद्धा करना।

३ आज्ञा रुचि—जिन प्रवचन पर केवल जिनाज्ञा होने से ही श्रद्धा करना। जिनाज्ञा ही मेरे लिये तत्त्वरूप है न कि तर्क-इस प्रकार आज्ञा रुचि वाला जिनाज्ञा को ही प्रधानता देता है और जिनाज्ञा ही उसकी श्रद्धा का आधार है।

४ सूत्र रुचि—आचारांग आदि अंग प्रविष्ट सूत्र और आवश्यक दशवैकालिक आदि अंग बाह्य सूत्र का अध्ययन करते हुए सम्यक्त्व प्राप्त करना।

५ बीज रुचि—पानी में तेल बिन्दु की तरह क्षयोपशम विशेष से एक पद के अध्ययन से अनेक पदों का ज्ञान प्राप्त कर उन पर श्रद्धा करना।

६ अधिगम रुचि—श्रुत ज्ञान यानी अंग उपांग तथा प्रकीर्णक शास्त्रों का अर्थ सहित अध्ययन कर श्रद्धा करना।

७ विस्तार रुचि—प्रमाण और नयों से द्रव्यों की सभी पर्यायों को जानकर श्रद्धा प्राप्त करना।

८ क्रिया रुचि—ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय,

समिति गुप्ति सम्बन्धि क्रियाओं का आचरण करते हुए सम्य-क्त्व प्राप्त करना।

९ संक्षेप रुचि—जिसे अन्य दर्शनों का आग्रह नहीं है और जैनागमों का भी जो जानकार नहीं है ऐसे व्यक्ति की जिनोक्त तत्त्वों में सामान्य रूप से श्रद्धा होना।

१० धर्म रूचि—जिनोक्त धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों पर और श्रुत तथा चारित्र धर्म पर श्रद्धा होना।

सम्यक्त्व के आठ आचार—(१)निःशंकित—जिन प्रवचनों में शंका न रखना। (२) निष्कांक्षित—परदर्शन की आकांक्षा—इच्छा न करना। (३) निर्विचिकित्सा—धर्म क्रिया के फल में सन्देह न रखना। (४) अमूढ़ दृष्टि—बाल तपस्वी के विद्या और तप के चमत्कार से मोहित होकर श्रद्धा से विचलित न होना। (५) उपबृंहण—स्वधर्मी के सद्गुणों की प्रशंसा कर उनकी वृद्धि करना। (६) स्थिरीकरण—धर्म से डिगते हुए को उपदेशादि द्वारा धर्म में स्थिर करना। (७) वात्सल्य—स्वधर्मी के प्रति वत्सल भाव रखकर उनका उपकार करना। (८) प्रभावना-धर्म कथा आदि से जिनशासन का प्रभाव प्रसिद्धि बढ़ाना।

वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद—(१) उपशान्त कषाय वीतराग दर्शन आर्य (२) क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य। क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद—१ छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य २ केवली क्षीण कषाय वीत-

राग दर्शन आर्य (१) छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद—१ स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य २ बुद्ध बोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य। (२) केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य के दो भेद—१ सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य २ अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आर्य। इन में प्रत्येक के प्रथम समय और अप्रथम समय के अथवा चरम समय और अचरम समय के भेद से दो दो भेद होते हैं।

चारित्र आर्य के पाँच भेद—१ सामायिक चारित्र आर्य २ छेदोपस्थापनीय चारित्र आर्य, ३ परिहार विशुद्ध चारित्र आर्य, ४ सूक्ष्मसम्पराय चारित्र आर्य, ५ यथाख्यात चारित्र आर्य।

—०—

२—उपपात समुद्घात तथा स्वस्थान का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र दूसरा पद)

(१) पाँच सूक्ष्म स्थावर के अपर्याप्त और पर्याप्त का * उपपात, समुद्घात और स्वस्थान सम्पूर्ण लोक में है। (२) अपर्याप्त बादर तेउकाय के सिवाय शेष चार बादर स्थावर के अपर्याप्त का उपपात और समुद्घात सारे लोक में है और स्वस्थान लोक के असंख्यातवें भाग में है, किन्तु अपर्याप्त बादर

* दूसरे स्थान से आकर उत्पन्न होना उपपात है। समुद्घात का आशय मारणान्तिक समुद्घात से है। जीव के रहने का स्थान स्वस्थान है।

वायुकायका स्वस्थान लोकके बहुतसे असंख्यातवें भागों में है।

(३) अपर्याप्त वादर तेउकाय का उपपात दोनों × ऊर्ध्व कपाटों में तथा तिर्यक् लोक के तट्ट यानी थाले में है। समुद्घात सारे लोक में है तथा स्वस्थान लोक के असंख्यातवें भाग में यानी मनुष्य लोक में है।

(४) पर्याप्त वादर तेउकायका उपपात और समुद्घात लोक के असंख्यातवें भाग में है और स्वस्थान मनुष्य लोक में है।

(५) पर्याप्त वादर वायुकाय का उपपात, समुद्घात और स्वस्थान लोक के बहुत से असंख्यातवें भागों में है।

(६) पर्याप्त वादर वनस्पतिकायका उपपात समुद्घात सारे लोक में है और स्वस्थान लोक के असंख्यातवें भाग में है।

(७) पर्याप्त वादर पृथ्वीकाय, पर्याप्त वादर अप्काय तथा शेष १९ दंडकों के पर्याप्त अपर्याप्त जीवों का उपपात समुद्घात

× दो ऊर्ध्व कपाट—पैंतालीस लाख योजन प्रमाण वाले मनुष्य लोक के दोनों ओर-पूर्व पश्चिम और उत्तर दक्षिण में पैंतालीस लाख योजन की मोटाई वाले दो ऊर्ध्व कपाट निकले हुए हैं। ये दोनों कपाट चारों दिशा में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त गये हुए हैं और केवली समुद्घात के कपाटकी तरह ऊपर और नीचे लोकान्त को स्पर्श करते हैं। आशय यह है कि कपाटाकार स्थित उपरोक्त परिमाण वाले आकाश क्षेत्र से अपर्याप्त वादर तेउकाय के जीव आकर उत्पन्न होते हैं।

तिर्यक् लोक के तट्ट यानी थाले का आशय स्वयंभूरमण समुद्र की वेदिका पर्यन्त अठारहसौ योजनकी मोटाई वाले सारे तिर्यक्लोकसे है।

और स्वस्थान लोक के असंख्यातवें भाग में है। इतना विशेष जानना कि मनुष्य केवली समुद्घातकी अपेक्षा सारे लोक में हैं।

—०—

३—दिसाणुवाय (दिशा की अपेक्षा जीवों के अल्पबहुत्व) का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

द्रव्य दिशा के अठारह भेद—१ पूर्व, २ पश्चिम, ३ उत्तर, ४ दक्षिण, ५ ईशानकोण, ६ नैर्ऋत्य कोण, ७ आग्नेय कोण, ८ वायव्य कोण, ९–१६ आठ दिशाओं के आठ अन्तर, १७ विमला (ऊँची दिशा), १८ तमा (नीची दिशा)।

भाव दिशा के अठारह भेद—१ पृथ्वी काय, २ अप्काय ३ तेउकाय (तेजस्काय), ४ वायुकाय, ५ अग्रबीज, ६ मूल बीज, ७ पर्व बीज, ८ स्कंध बीज, ९ द्वीन्द्रिय, १० त्रीन्द्रिय, ११ चतुरिन्द्रिय, १२ तिर्यंच पंचेन्द्रिय, १३ कर्म भूमि १४ अकर्म भूमि, १५ अन्तरद्वीप, १६ सम्मूर्छिम मनुष्य, १७ नारकी १८ देवता।

१ प्रश्न—समुच्चय जीव, वनस्पतिकाय, अप्काय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और तिर्यंच पंचेन्द्रिय—इन सात बोलों के जीव किस दिशा में थोड़े हैं किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—सबसे थोड़े पश्चिम दिशा में हैं। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन का

गौतम द्वीप है। इसलिये पश्चिम दिशा में अप्काय के जीव थोड़े हैं और इस कारण सातों ही बोल के जीव थोड़े हैं। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में गौतम द्वीप नही है, इस कारण अप्काय अधिक है और इस लिए सात ही बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में चँद्र सूर्य के द्वीप नहीं हैं। इसलिये अप्काय अधिक है और इसीलिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्यात कोटि कोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बा चौड़ा है। इस सरोवर के कारण उत्तर दिशा में अप्काय अधिक है और इस लिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं।

२ प्रश्न—पृथ्वीकाय के जीव किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—दक्षिण दिशा में पृथ्वीकाय के जीव सबसे थोड़े हैं। इस दिशा में भवनपतियों के ४,०६,००,००० भवन हैं अतः पोलार अधिक है पृथ्वीकाय थोड़ी है। उत्तरदिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में भवनपतियों के ३,६६,००,००० भवन हैं अतः पोलार कम है पृथ्वीकाय अधिक है। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा

ं पृथ्वी अधिक कठोर है। पश्चिम दिशामें इनसे विशेपाधिक हैं। कारण यह है कि पश्चिम दिशामें लवण समुद्र में बारह हजार योजन विस्तार वाला गौतम द्वीप है जो पृथ्वी रूप है।

२ प्रश्न—वायुकाय और व्यन्तर जाति के देवता किस दिशा में थोड़े हैं ? किस दिशा में अधिक हैं ?

उत्तर—सबसे थोड़े पूर्व दिशा में हैं। पूर्वदिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है इसलिये वायुकाय थोड़ी है और व्यन्तर देवता भी थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेपाधिक हैं। पश्चिम दिशा में सलिलावती विजय है जो एक हजार योजन गहरा और तिर्छा है जिसमें वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवता भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर-दिशा में विशेपाधिक हैं। उत्तरदिशा में ३,६६,००,००० भवनपति देवों के भवन हैं इसलिये पोलार अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय अधिक है और व्यन्तर देवों के नगर भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेपाधिक हैं। दक्षिणदिशा में भवनपति देवों के ४,०६००,००० भवन हैं इस कारण पोलार और अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवों के नगर भी अधिक हैं। यहाँ × कृष्णपक्षी जीव अधिक उत्पन्न होते हैं।

× जिनका संसार अर्ध पुद्गल परावर्तन मात्र शेष रहगया है वे शुक्ल पाक्षिक हैं। जिनका संसार इससे अधिक है वे कृष्ण पाक्षिक हैं।

(४) प्रश्न—मनुष्य, मनुष्य स्त्री, बादर तेजस्काय और सिद्ध भगवान् किस दिशा में थोडे हैं किस दिशा में अधिक हैं ?

उत्तर—सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं, बादर तेउकाय थोड़ी है और यहां से थोड़े जीव सिद्ध होते हैं। इनकी अपेक्षा पूर्व दिशा में संख्यात गुणा हैं। पूर्वदिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा है। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं, बादर तेउकाय अधिक है और यहाँ से बहुत जीव सिद्ध होते हैं इस लिये पूर्वदिशा में संख्यातगुणा कहा है। इनकी अपेक्षा पश्चिमदिशा में विशेषाधिक हैं। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है जिसमें सलिलावती विजय है जो एक हजार योजन गहरा (ऊंडा) तिर्छा है। यहाँ मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं, बादर तेउकाय अधिक है और यहाँ से बहुत जीव सिद्ध होते हैं।

(५) प्रश्न—भवनपति देव और देवियाँ किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं ?

उत्तर—सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। पूर्व पश्चिम दिशा में भवनपति देवों के भवन नहीं हैं। केवल आते जाते हैं। इसकी अपेक्षा उत्तरदिशा में असंख्यात गुणा हैं क्योंकि उत्तरदिशा में ३,६६,००,००० भवनपति देवों के

भवन हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिणदिशा में असंख्यात गुणा हैं। दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के ४,०६,००,००० भवन हैं अतः असंख्यातगुणा बतलाये हैं। यहां कृष्ण पक्षी अधिक उत्पन्न होते हैं।

(६) प्रश्न—ज्योतिषी देव किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। इन दोनों दिशाओं में चन्द्र सूर्य के द्वीप हैं इससे यहाँ ज्योतिषी देव थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में ज्योतिषी देव विशेषाधिक हैं। इस दिशा में चन्द्र सूर्य के द्वीप न होकर राजधानियाँ हैं। यहां जीव बहुत उत्पन्न होते हैं। इनकी अपेक्षा उत्तरदिशा में विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में असंख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानसरोवर नामक झील है जो संख्याता कोटि कोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बा चौड़ा है। मानसरोवर के रत्नों की पाल है। यहां बहुत से ज्योतिषी देव स्नान, मंजन, क्रीड़ा कौतुक के लिये आते हैं। इन्हें देख कर यहां के तिर्यंच जीवों को जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है। वे करणी करके निदान करते हैं और यहां ज्योतिषी देवों में उत्पन्न होते हैं। इसलिये विशेषाधिक हैं।

(७) प्रश्न—पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे देवलोक के

देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। इन देव-लोकों में दो तरह के विमान होते हैं × आवलिका प्रविष्ट विमान और पुष्पावकीर्ण विमान। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं पर पुष्पावकीर्ण विमान पूर्व पश्चिम दिशा में थोड़े हैं। इसलिए पूर्व पश्चिम में सबसे थोड़े बताये हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में असंख्यात गुणा हैं। उत्तर दिशा में बहुत से पुष्पावकीर्ण विमान हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं तथा यहाँ कृष्णपक्षी भी बहुत उत्पन्न होते हैं।

(८) प्रश्न—पांचवें, छठे, सातवें और आठवें देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं।

उत्तर—सबसे थोड़े पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में पुष्पावकीर्ण विमान कम हैं और कृष्णपाक्षिक जीव कम उत्पन्न होते हैं इसलिये थोड़े हैं। दक्षिणदिशा में इनकी अपेक्षा असंख्यातगुणा हैं। इस दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं और यहां कृष्णपक्षी तिर्यंच योनि के जीव

× श्रेणी में रहे हुए पंक्ति बद्ध विमान आवलिका प्रविष्ट कहलाते हैं। श्रेणी से बाहर अव्यवस्थित रूप से रहे हुए विमान पुष्पावकीर्ण विमान कहलाते हैं।

बहुत उत्पन्न होते हैं। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं।

(९) प्रश्न—नवमे देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवता किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—चारों दिशाओं में तुल्य हैं।

(१०) प्रश्न—पहली नारकी के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं? इसी तरह दूसरी तीसरी यावत् सातवीं नारकी के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—पहली नारकी के नेरीये सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। इसी तरह दूसरी यावत् सातवीं नारकी तक के नेरीयों का अल्प बहुत्व है।

(११) प्रश्न—पहली नारकी से सातवीं नारकी तक के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर—सबसे थोड़े सातवीं नारकी के नेरीये पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में नेरीये थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा सातवीं नारकी के नेरीये दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। इस दिशा में कृष्ण पाक्षिक जीव भी बहुत उत्पन्न होते हैं। सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीयों की अपेक्षा छट्ठी नारकी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में नेरीं

असंख्यातगुणा हैं और उनकी अपेक्षा छठी नारकी में दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा हैं। सबसे उत्कृष्ट पाप करने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य सातवीं नारकी में उत्पन्न होते हैं जो थोड़े हैं। उनसे कुछ हीन हीनतर पाप करने वाले छठी पांचवीं आदि नारकियों में उत्पन्न होते हैं और वे उत्तरोत्तर अधिक हैं। इसलिये सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीयों से छठी नारकी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा बताये हैं। इनकी अपेक्षा छठी नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यातगुणा हैं। कारण जो ऊपर सातवीं नारकी के वर्णन में बताया है वही समझना। इसी तरह पांचवीं, चौथी, तीसरी, दूसरी और पहली नारकी में भी पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में पूर्ववर्ती नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीयों से असंख्यातगुणा तथा उनसे दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यातगुणा कहना।

(१२)प्रश्न—पहली नारकी से सातवीं नारकी तक किस नारकी के नेरीये थोड़े हैं और किसके अधिक हैं?

उत्तर—सबसे थोड़े सातवीं नारकी के नेरीये हैं। उनसे छठी नारकी के नेरीये असंख्यात गुणा, उनसे पांचवीं नारकी के नेरीये असंख्यातगुणा यावत् पहली नारकी के नेरीये असंख्यातगुणा हैं।

—०—

४—गति इन्द्रिय और काया की ५८ अल्पबहुत्व

[पन्नवणा सूत्र तीसरा पद]

गति की दो, इन्द्रिय की दस और काय की छियालीस अल्पबहुत्व हैं।

गति की दो अल्पबहुत्व—

(१) पांच गति की अल्पबहुत्व १ सबसे थोड़े मनुष्य २ नेरीया असंख्यातगुणा ३ देव असंख्यातगुणा ४ सिद्ध भगवान् अनन्तगुणा ५ तिर्यंच अनन्तगुणा।

(२) गति के आठ बोलों की अल्पबहुत्व —

१ सबसे थोड़ी मनुष्य स्त्रियाँ २ मनुष्य असंख्यातगुणा ३ नेरीया असंख्यातगुणा ४ तिर्यंच स्त्रियाँ असंख्यातगुणी ५ देवता असंख्यातगुणा ६ देवियाँ संख्यातगुणी ७ सिद्ध भगवान अनन्त गुणा ८ तिर्यंच अनन्त गुणा।

इन्द्रिय की दस अल्पबहुत्व।

(१) सेन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय की अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़े पंचेन्द्रिय २ चतुरिन्द्रिय विशेषाधिक ३ त्रीन्द्रिय विशेषाधिक ४ द्वीन्द्रिय विशेषाधिक ५ अनिन्द्रिय अनन्तगुणा ६ एकेन्द्रिय अनन्तगुणा ७ सेन्द्रिय विशेषाधिक।

(२) सेन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े

पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त २ चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ३ त्रीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ४ द्वीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ५ एकेन्द्रिय के अपर्याप्त अनन्तगुणा ६ सेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक।

(३) उपरोक्त छह बोलों के पर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त २ पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ३ द्वीन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ४ त्रीन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ५ एकेन्द्रिय के पर्याप्त अनन्तगुणा ६ सेन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक।

(४) सेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े सेन्द्रिय के अपर्याप्त २ सेन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा।

(५) एकेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े एकेन्द्रिय के अपर्याप्त २ एकेन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा।

(६) द्वीन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े द्वीन्द्रिय के पर्याप्त २ द्वीन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

(७) त्रीन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े त्रीन्द्रिय के पर्याप्त २ त्रीन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

(८) चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े चतुरिन्द्रियके पर्याप्त २ चतुरिन्द्रियके अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

(९) पंचेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े पंचेन्द्रियके पर्याप्त २ पंचेन्द्रियके अपर्याप्त असंख्यात गुणा।

(१०) सेन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त २ पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ३ द्वीन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ४ त्रीन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक ५ पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ६ चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ७ त्रीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ८ द्वीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ९ एकेन्द्रिय के अपर्याप्त अनन्त गुणा १० सेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेपाधिक ११ एकेन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा १२ सेन्द्रिय के पर्याप्त विशेपाधिक १३ समुच्चय सेन्द्रिय विशेपाधिक।

काया की ४९ अल्पबहुत—

त्रस स्थावर की ११, सूक्ष्म की ११, बादर की १३, सूक्ष्म बादर शामिल की ११, इस तरह काया की ४९ अल्पबहुत्व हैं

त्रस स्थावर की ११ अल्पबहुत्व—

(१) सकायिक, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय वनस्पतिकाय, त्रसकाय और अकायिक—इन आठ बोलों की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े त्रसकाय २ तेजस्काय असंख्यात गुणा ३ पृथ्वीकाय विशेपाधिक ४ अप्काय विशेपाधिक ५ वायुकाय विशेपाधिक ६ अकायिक अनन्त गुणा (७) वनस्पतिकाय अनन्त गुणा ८ सकायिक विशेपाधिक।

(२) सकायिक, और छह काय के अपर्याप्त की अल्प

बहुत्व—१ सबसे थोड़े त्रसकाय के अपर्याप्त २ तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ पृथ्वीकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक ४ अप्काय के अपर्याप्त विशेषाधिक ५ वायुकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक ६ वनस्पतिकाय के अपर्याप्त अनन्तगुणा ७ सकायिक के अपर्याप्त विशेषाधिक ।

(३) सकायिक और छह काय के पर्याप्त की अल्पबहुत्व—उपरोक्त सकायिक और छह काय के अपर्याप्त की अल्पबहुत्व की तरह इन सातों बोलों के पर्याप्त की अल्पबहुत्व है ।

(४) सकायिक के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े सकायिकके अपर्याप्त २ सकायिकके पर्याप्त संख्यात गुणा ।

(५) पृथ्वीकायके पर्याप्त अपर्याप्तकी अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े पृथ्वीकायके अपर्याप्त २ पृथ्वीकायके पर्याप्त संख्यात गुणा ।

(६) अप्कायके पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े अप्काय के अपर्याप्त २ अप्काय के पर्याप्त संख्यात गुणा ।

(७) तेजस्कायके पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े तेजस्कायके अपर्याप्त २ तेजस्कायके पर्याप्त संख्यात गुणा ।

(८) वायुकायके पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े वायुकाय के अपर्याप्त २ वायुकाय के पर्याप्त संख्यात गुणा ।

(९) वनस्पतिकाय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े वनस्पतिकाय के अपर्याप्त २ वनस्पतिकाय के पर्याप्त संख्यात गुणा ।

असंख्यात गुणा ४ बादर निगोद असंख्यात गुणा ५ बादर पृथ्वीकाय असंख्यात गुणा ६ बादर अप्काय असंख्यात गुणा ७ बादर वायुकाय असंख्यात गुणा ८ सूक्ष्म तेजस्काय असंख्यात गुणा ६ सूक्ष्म पृथ्वीकाय विशेषाधिक १० सूक्ष्म अप्काय विशेषाधिक ११ सूक्ष्म वायुकाय विशेषाधिक १२ सूक्ष्म निगोद असंख्यात गुणा १३ बादर वनस्पतिकाय अनन्त गुणा १४ समुच्चय बादर विशेषाधिक १५ सूक्ष्म वनस्पतिकाय असंख्यात गुणा १६ समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक।

(२) उपरोक्त १६ बोलों के अपर्याप्त की अल्पबहुत्व उपरोक्त पहली अल्पबहुत्व के समान ही है।

(३) उपरोक्त सोलह बोलों के पर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर तेजस्काय के पर्याप्त २ बादर त्रसकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा। आगे ३ से १६ बोल तक की अल्पबहुत्व पहली अल्पबहुत्व की तरह ही है।

(४) सूक्ष्म और बादर के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर के पर्याप्त २ बादर के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ सूक्ष्म के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ४ सूक्ष्म के पर्याप्त संख्यात गुणा।

(५) सूक्ष्म पृथ्वीकाय और बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त २ बादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ सूक्ष्म

वीकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ४ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के ाप्त संख्यात गुणा।

(६) सूक्ष्म अप्काय और बादर अप्काय के पर्याप्त अपर्याप्त । अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर अप्काय के पर्याप्त २ बादर काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त संख्यात गुणा ४ सूक्ष्म अप्काय के पर्याप्त संख्यात गुणा।

(७) सूक्ष्म तेजस्काय और बादर तेजस्काय के पर्याप्त पर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर तेजस्काय के र्याप्त २ बादर तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ सूक्ष्म जस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ४ सूक्ष्म तेजस्काय के र्याप्त संख्यात गुणा।

(८) सूक्ष्म वायुकाय और बादर वायुकाय के पर्याप्त पर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर वायुकाय के र्याप्त २ बादर वायुकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ३ सूक्ष्म ायुकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ४ सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त ख्यात गुणा।

(९) सूक्ष्म वनस्पतिकाय और बादर वनस्पतिकाय के र्याप्त अपर्याप्त की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े बादर वनस्पति-काय के पर्याप्त २ बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात ुणा ३ सूक्ष्म वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा ४ ूक्ष्म वनस्पतिकाय के पर्याप्त संख्यात गुणा।

(१०) सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय में प्रत्येक में जीव के भेद २, गुणस्थान २ (पहले) योग ४ (औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्माण और व्यवहार भाषा) द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय में प्रत्येक में उपयोग ५ (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अचक्षुदर्शन) चतुरिन्द्रिय में उपयोग ६ (चक्षुदर्शन बढ़ा) लेश्या प्रत्येक में ३ पहली। अनिन्द्रिय में जीव का भेद १ (संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त) गुणस्थान २ (१३-१४) योग ५ अथवा ७ (१ सत्य मनोयोग, २ व्यवहार मनोयोग, ३ सत्य भाषा, ४ व्यवहार भाषा और ५ औदारिक ये पाँच अथवा ७ तब औदारिक मिश्र व कार्माण बढ़ा) उपयोग २ (केवल ज्ञान, केवल दर्शन) लेश्या १ (शुक्ल)।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े पंचेन्द्रिय २ चतुरिन्द्रिय विशेषाधिक ३ त्रीन्द्रिय विशेषाधिक ४ द्वीन्द्रिय विशेषाधिक ५ अनिन्द्रिय अनन्त गुणा ६ एकेन्द्रिय अनन्तगुणा ७ सइन्द्रिय विशेषाधिक।

(४) काय द्वार—काय द्वार के ८ भेद—१ सकायिक २ पृथ्वीकाय ३ अप्काय ४ तेजस्काय ५ वायुकाय ६ वनस्पतिकाय ७ त्रसकाय ८ अकायिक।

सकायिक में जीव के भेद १४ त्रसकाय में जीव के भेद १० (५ से १४) दोनों में प्रत्येक में गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय में प्रत्येक में जीव के भेद ४ गुणस्थान

१ (पहला) वायुकाय के सिवा ४ काय में प्रत्येक में योग ३ (दो औदारिक के व कार्मण) वायुकाय में योग ५ (दो वैक्रिय के बढ़े) उपयोग प्रत्येक में ३ (२ अज्ञान और अचक्षुदर्शन) पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय में प्रत्येक में लेश्या ४ पहली और तेजस्काय वायुकाय में प्रत्येक में लेश्या ३ पहली। अकायिक में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, लेश्या नहीं, उपयोग २ (केवल ज्ञान और केवल दर्शन)।

अल्पबहुत्व—(१) सबसे थोड़े त्रसकाय (२) तेजस्काय असंख्यातगुणा (३) पृथ्वीकाय विशेषाधिक (४) अप्काय विशेषाधिक (५) वायुकाय विशेषाधिक (६) अकायिक अनन्तगुणा (७) वनस्पतिकाय अनन्तगुणा (८) सकायिक विशेषाधिक।

(५) योगद्वार—(१) सयोगी (२) मनयोगी (३) वचनयोगी (४) काययोगी (५) अयोगी।

सयोगी और काययोगी में प्रत्येक में जीव के भेद १४ गुणस्थान १३ योग १५ उपयोग १२ और लेश्या ६। मनयोगी में जीव का भेद १(संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त) वचनयोगी में जीव का भेद ५ (तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त) दोनो में प्रत्येक में गुणस्थान १३ योग १४ (कार्मण वर्जकर) उपयोग १२ लेश्या ६। अयोगी में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान १ (१४) योग नहीं, उपयोग २ (केवल ज्ञान, केवल दर्शन) लेश्या नहीं।

अल्पबहुत्व—(१) सबसे थोड़े मनयोगी (२) वचनयोगी

अनन्तगुणा ५ कापोत लेश्या वाले अनन्तगुणा ६ नील लेश्या वाले विशेपाधिक ७ कृष्ण लेश्या वाले विशेपाधिक ८ सलेशी विशेपाधिक।

(९) सम्यक्त्व द्वार—सम्यक्त्व द्वार के ८ भेद—१ समुच्चय समदृष्टि २ सास्वादन सम्यक्त्व ३ उपशम सम्यक्त्व ४ क्षयोपशम सम्यक्त्व ५ वेदक सम्यक्त्व ६ क्षायिक सम्यक्त्व ७ मिथ्यात्व ८ मिश्र दृष्टि।

समुच्चय समदृष्टि में जीव के भेद ६ (३ विकलेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त और पर्याप्त) गुणस्थान १२ (१ व ३ छोड़कर) योग १५ उपयोग ९ (तीन अज्ञान छोड़कर) लेश्या ६। सास्वादन सम्यक्त्व में जीव के भेद ६ गुणस्थान १ (दूसरा) योग १३ (आहारक, आहारक मिश्र वर्जकर) उपयोग ६ (तीन ज्ञान, तीन दर्शन) लेश्या ६। उपशम सम्यक्त्व में जीव के भेद २ (१३, १४) गुणस्थान ८ (४ से ११) योग १५ उपयोग ७ (चार ज्ञान तीन दर्शन) लेश्या ६। क्षयोपशम और वेदक सम्यक्त्व में जीव के भेद २ (१३, १४) गुणस्थान ४ (४ से ७ तक) योग १५ उपयोग ७ लेश्या ६। क्षायिक सम्यक्त्व में जीव के भेद २ गुणस्थान ११ (४ से १४) योग १५ उपयोग ९ लेश्या ६। मिथ्यात्व में जीव के भेद १४ गुणस्थान १ योग १३ (आहारक के दो वर्जकर) उपयोग ६ लेश्या ६। मिश्र दृष्टि में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान १ (३) योग १० (४ मन के

४ वचन के १ औदारिक और १ वैक्रिय) उपयोग ६ (
अज्ञान, तीन दर्शन) लेश्या ६ ।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े सास्वादन सम्यक्त्व वा
उपशम सम्यक्त्व वाले संख्यातगुणा ३ मिश्र दृष्टि असं
गुणा ४ क्षयोपशम सम्यक्त्व वाले असंख्यात गुणा ५
सम्यक्त्व वाले संख्यात गुणा ६ क्षायिक सम्यक्त्व वाले
गुणा ७ समुच्चय सम्यग् दृष्टि विशेपाधिक ८ मिथ्या
अनन्त गुणा ।

(१०) ज्ञान द्वार—ज्ञान द्वार के १० भेद—१ स
ज्ञानी २ मति ज्ञानी ३ श्रुत ज्ञानी ४ अवधि ज्ञानी ५
पर्यव ज्ञानी ६ केवल ज्ञानी ७ मति अज्ञानी ८ श्रुत अ
९ विभंग ज्ञानी १० समुच्चय अज्ञानी ।

समुच्चय ज्ञानी में जीव के भेद ६ (सम्यक् दृ
अनुसार) गुणस्थान १२ (१,३ वर्जकर) योग १५ उ
९ लेश्या ६ । मति ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी में प्रत्येक में
भेद ६ गुणस्थान १० (१,३,१३,१४ छोड़कर) योग
उपयोग ७ (चार ज्ञान, तीन दर्शन) लेश्या ६ ।

अवधि ज्ञानी में जीव के भेद २ (१३–१४) गुण
१० (१,३,१३,१४ छोड़कर) योग १५ उपयोग ७
६ । मनः पर्यव ज्ञानी में जीव का भेद १ (१४) गुणस्
(६ से १२) योग १४ (कार्मण योग नहीं) उपयो
लेश्या ६ । केवल ज्ञानी में जीव का भेद १ गुणस्थ

(१३,१४) योग ५ या ७ (अनिन्द्रियवत्) उपयोग २ लेश्या १ (परम शुक्ल)। समुच्चय अज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी में प्रत्येक में जीव के भेद १४ गुणस्थान २ (१,३) योग १३ (दो आहारक के छोड़कर) उपयोग ६ (३ अज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ६ । विभंग ज्ञानी में जीव के भेद २ (१३,१४) गुणस्थान २ योग १३ उपयोग ६ लेश्या ६ ।

अल्पबहुत्व— ज्ञान की अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े मनः पर्यव ज्ञानी २ अवधि ज्ञानी असंख्यातगुणा ३-४ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी परस्पर तुल्य विशेपाधिक ५ केवल ज्ञानी अनन्त गुणा ६ समुच्चय ज्ञानी विशेपाधिक । अज्ञान की अल्पबहुत्व– १ सबसे थोड़े विभंग ज्ञानी २-३ मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी परस्पर तुल्य अनन्तगुणा । ज्ञान अज्ञान दोनों की सम्मिलित अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़ा मनः पर्यव ज्ञानो २ अवधि ज्ञानी असंख्यातगुणा ३-४ मति ज्ञानी श्रुत ज्ञानी परस्पर तुल्य विशेपाधिक ५ विभंग ज्ञानी असंख्यातगुणा ६ केवल ज्ञानी अनन्तगुणा ७ समुच्चय ज्ञानी विशेपाधिक ८-९ मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी परस्पर तुल्य अनन्तगुणा १० समुच्चय अज्ञानी विशेपाधिक ।

(११) दर्शनद्वार—दर्शन के ४ भेद—१ चक्षु दर्शन २ अचक्षु दर्शन ३ अवधि दर्शन ४ केवल दर्शन ।

चक्षु दर्शन में जीव के भेद ३ अथवा ६ तीन पावे तो (१०,१२,१४) छह पावे तो (९ से १४ तक) गुणस्थान

१२ (१३-१४ वर्जकर), योग १४ (कार्मण छोड़
उपयोग १० (केवल ज्ञान, केवल दर्शन छोड़कर) लेश्य
अचक्षु दर्शन में जीव के भेद १४ गुणस्थान १२ (पहले)
१५ उपयोग १० लेश्या ६। अवधि दर्शन में जीव के
२ (१३,१४) गुणस्थान १२ (पहले) योग १५, उ
१० लेश्या ६। केवल दर्शन में जीव का भेद १ (१४)
स्थान २ (१३,१४) योग ५ तथा ७ (अनिन्द्रियवत्) उ
२, लेश्या १ (परम शुक्ल)।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े अवधि दर्शन वाले
दर्शन वाले असंख्यातगुणा ३ केवल दर्शन वाले अनन्
४ अचक्षु दर्शन वाले अनन्तगुणा।

(१२) संयत द्वार—संयत द्वार के नौ भेद—१ स
संयत २ सामायिक चारित्र ३ छेदोपस्थापनीय चारित्र ४
हार विशुद्धि चारित्र ५ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ६ यथा
चारित्र (७) संयतासंयत ८ असंयत ६ नो संयत नो
नो संयतासंयत।

समुच्चय संयत में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थ
(६ से १४ तक) योग १५ उपयोग ६ लेश्या ६।
यिक चारित्र और छेदोपस्थापनीय चारित्र में प्रत्ये
जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान ४ (६ से ६ तक
१४ (कार्मण योग छोड़कर) उपयोग ७ (४ ज्ञान ३
लेश्या ६। परिहार विशुद्धि चारित्र में जीव का भेद १

गुणस्थान २ (६,७) योग ९ (४ मनके ४ वचन के व औदारिक) उपयोग ७ (४ ज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ३ (४ से ६) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान १ (१०) योग ९ उपयोग ४ (चार ज्ञान) लेश्या १ (शुक्ल) यथाख्यात चारित्र में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान ४ (११ से १४) योग ११ (४ मनके ४ वचन के औदारिक औदारिक मिश्र और कार्मण) उपयोग ९ लेश्या १ (शुक्ल)। संयतासंयत में जीव का भेद १ (१४) गुणस्थान १ (पांचवां योग १२ (आहारक के दो व कार्मण वर्जकर) उपयोग ६ (३ ज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ६। असंयत में जीव के भेद १४ गुणस्थान ४ (पहले) योग १३ (आहारक के दो वर्जकर) उपयोग ९ (३ ज्ञान, ३ अज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ६। नो संयत नो असंयत नो संयतासंयत में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, लेश्या नहीं, उपयोग २ (केवल ज्ञान, केवल दर्शन)।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े सूक्ष्म सम्पराय चारित्र वाले २ परिहार विशुद्धि चारित्र वाले संख्यातगुणा ३ यथाख्यात चारित्र वाले संख्यातगुणा ४ छेदोपस्थापनीय चारित्र वाले संख्यातगुणा ५ सामायिक चारित्र वाले संख्यातगुणा ६ समुच्चय संयत विशेषाधिक ७ संयतासंयत असंख्यातगुणा ८ नो संयत नो असंयत नो संयतासंयत अनन्तगुणा ९ असंयत अनन्तगुणा।

(१३) उपयोग द्वार—उपयोग के दो भेद—१ साकार उपयोग २ अनाकार उपयोग। साकार उपयोग और अनाकार

उपयोग दोनों में प्रत्येक में जीव के भेद १४ गुणस्थान साकार उपयोग में १४ और अनाकार उपयोग में १३ (१० वां वर्जकर) दोनों में प्रत्येक में योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६ ।

अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े अनाकार उपयोग वाले २ साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा ।

(१४) आहारक द्वार—इसके दो भेद—१ आहारक २ अनाहारक। आहारक में जीव के भेद १४ गुणस्थान १३ [पहले के] योग १४ [कार्मण वर्जकर] उपयोग १२ लेश्या ६। अनाहारक में जीव के भेद ८ [सात अपर्याप्त और संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त] गुणस्थान ५ [१,२,४,१३,१४] योग १ [कार्मण] उपयोग १० [मनःपर्यव ज्ञान और चक्षु दर्शन के सिवा] लेश्या ६ ।

अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े अनाहारक २ आहारक संख्यातगुणा ।

(१५) भापक द्वार—इसके दो भेद—१ भापक २अभापक ।

भापक में जीव के भेद ५ [३ विकलेन्द्रीय असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त] गुणस्थान १३ [प्रथम से] योग १४ [कार्मण वर्जकर] उपयोग १२ लेश्या ६ । अभापक में जीव के भेद १० [तीन विकलेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय के पर्याप्त के सिवा] गुणस्थान ५ (१,२,४,१३,१४) योग ५ (दो औदारिक, दो वैक्रिय और कार्मण) उपयोग १० (मनःपर्यव ज्ञान और चक्षु दर्शन वर्जकर) लेश्या ६ ।

अल्पवहुत्व—१ सबसे थोड़े भापक २ अभापक अनन्तगुणा ।

(२०) भव्य द्वार—इसके ३ भेद—१ भव्य २ अभव्य
नो भव्य नो अभव्य।

भव्य में जीव के भेद १४ गुणस्थान १४ योग १
उपयोग १२ लेश्या ६। अभव्य में जीव के भेद १४ गु
१ (पहला) योग १३ (आहारक के दो वर्जे) उपयोग ६ (
अज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ६। नो भव्य नो अभव्य में
का भेद नहीं, गुणस्थान नहीं, योग नहीं, उपयोग २ (के
ज्ञान, केवल दर्शन) लेश्या नहीं।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े अभव्य २ नो भव्य नो
अनन्तगुणा ३ भव्य अनन्तगुणा।

(२१) चरम द्वार—इसके दो भेद—१ चरम २ अचरम

चरम में जीव के भेद १४ गुणस्थान १४ योग १
उपयोग १२ लेश्या ६। अचरम में जीव के भेद १४ गुणस्थ
१ (पहला) योग १३ उपयोग ८ (३ अज्ञान, केवल ज्ञा
४ दर्शन) लेश्या ६।

अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े अचरम २ चरम अनन्तगुण

अस्तिकाय द्वार की अल्पबहुत्व—अस्तिकाय की द्रव्य
अपेक्षा (दव्वट्ठयाए) अल्पबहुत्व—१ धर्मास्तिकाय, अधम
स्तिकाय और आकाशास्तिकाय द्रव्य रूप से एक है अ
परस्पर तुल्य हैं और सबसे थोड़े हैं २ जीवास्तिकाय द्रव्य र
से अनन्तगुणा है ३ पुद्गलास्तिकाय द्रव्य रूप से अनन्तगु
है ४ काल द्रव्य रूप से अनन्तगुणा है।

अस्तिकाय की प्रदेश की अपेक्षा (पएसट्ठयाए) अल्प-बहुत्व—१ धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय प्रदेश की अपेक्षा परस्पर तुल्य हैं और सबसे थोड़े हैं २ जीवास्तिकाय प्रदेश की अपेक्षा अनन्तगुणा ३ पुद्गलास्तिकाय प्रदेश की अपेक्षा अनन्तगुणा ४ * कालप्रदेश रूप से अनन्तगुणा ५ आकाशास्तिकाय प्रदेश रूप से अनन्तगुणा।

अस्तिकाय द्रव्यों में प्रत्येक की द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा अल्पबहुत्व—

१ सबसे थोड़ा एक धर्मास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा। २ प्रदेश की अपेक्षा असंख्यातगुणा।

२ सबसे थोड़ा एक अधर्मास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा २ प्रदेश की अपेक्षा असंख्यातगुणा।

३ सबसे थोड़ा एक आकाशास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा प्रदेश की अपेक्षा अनन्तगुणा।

४ सबसे थोड़े जीवास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा २ वे ही प्रदेश की अपेक्षा असंख्यातगुणा क्योंकि प्रत्येक जीव में लोकाकाश के बराबर प्रदेश होते हैं।

५ सबसे थोड़े पुद्गलास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा २ वे ही प्रदेश की अपेक्षा असंख्यातगुणा।

काल के प्रदेश नहीं होने से उसकी अल्पबहुत्व सम्भव नहीं है।

* यहाँ प्रदेश से भूत और भविष्य के समय लिये हैं। वैसे काल के प्रदेश नहीं होते हैं।

द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा अस्तिकाय द्रव्यों की सम्मिलित अल्पबहुत्व—१ सबसे थोड़े धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय द्रव्य रूप से परस्पर तुल्य २ धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय प्रदेश की अपेक्षा असंख्यातगुणा ३ जीवास्तिकाय द्रव्य रूप से अनन्तगुणा ४ वे ही प्रदेश रूप से असंख्यातगुणा ५ पुद्गलास्तिकाय द्रव्य रूप से अनन्तगुणा ६ वे ही प्रदेश रूप से असंख्यातगुणा ७ काल द्रव्य और×प्रदेश रूप से अनन्तगुणा ८ आकाशास्तिकाय प्रदेश रूप से अनन्तगुणा ।

—०—

६—जीवादि छह बोलों की अल्पबहुत्व

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

जीव, पुद्गल, काल (अद्धासमय), सर्व द्रव्य, सर्व प्रदेश और सर्व पर्यव (पर्याय) की अल्पबहुत्व—

१ सबसे थोड़े जीव २ पुद्गल अनन्तगुणा ३ काल अनन्तगुणा ४ सर्व द्रव्य विशेषाधिक ५ सर्वप्रदेश अनन्तगुणा ६ सर्व पर्यव अनन्तगुणा ।

—०—

७–खित्ताणुवाय (क्षेत्रानुपात)

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

इस थोकड़े में क्षेत्र के छह भेद कर उनकी अपेक्षा क्षेत्र की अल्पबहुत्व बताया गया है। छह भेद ये हैं—१ ऊर्ध्वलोक

× यहाँ भी प्रदेश से भूत भविष्य के समय लिये हैं। वैसे काल अप्रदेशी होता है।

२ अधोलोक ३ तिर्यक्लोक (तिरछालोक) ४×ऊर्ध्वलोक तिर्यक् लोक ५ * अधोलोक तिर्यक्लोक ६ त्रिलोक (तीन लोक)।

१—समुच्चय जीव, समुच्चय तिर्यंच ये दो बोल, समुच्चय एकेन्द्रिय और समुच्चय पांच स्थावर ये छह बोल तथा इन छह बोलों के पर्याप्त और अपर्याप्त ये बारह बोल सब मिलाकर ये

×ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक—चौदह रज्जु प्रमाण लोक है जो ऊर्ध्वलोक, तिर्यक्लोक और अधोलोक रूप है। तीनलोक का यह विभाग मेरू पर्वत के मध्य रहे हुए रुचक प्रदेशों की अपेक्षा है। मेरु पर्वत एक हजार योजन भूमि में है और ९९ हजार योजन भूमि ऊपर है भूमि के समतल के मेरू प्रदेश में आठ रुचक प्रदेश रहे हुए हैं। इन रुचक प्रदेशों के ९०० योजन नीचे अधोलोक है और रुचक प्रदेशों के ९०० योजन ऊपर उर्ध्वलोक है। ऊर्ध्वलोक और अधोलोक के बीच अठारह सौ योजन प्रमाण तिर्यक्लोक है। ऊर्ध्वलोक का प्रमाण सात रज्जु से कुछ कम है और अधोलोक का प्रमाण सात रज्जु से कुछ अधिक है। रुचक प्रदेशों से ९०० योजन ऊपर तिर्यक्लोक का अन्तिम एक आकाश प्रदेश का प्रतर तिर्यक्लोक प्रतर है और इसके ऊपर का ऊर्ध्वलोक के नीचे ही नीचे का एक आकाश प्रदेश का प्रतर ऊर्ध्वलोक प्रतर है। इन दोनों प्रतरों का नाम ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक है।

*अधोलोक तिर्यक्लोक—अधोलोक के ऊपर ही ऊपर का एक आकाश प्रदेश का प्रतर अधोलोक प्रतर है और तिर्यक्लोक के नीचे ही नीचे का एक आकाश प्रदेश का प्रतर तिर्यक्लोक प्रतर है। इन दोनों प्रतरों का नाम अधोलोक तिर्यक्लोक है।

२० बोल—१ सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक १ में २ उनसे अधोलोक तीर्यक्लोक २ में विशेषाधिक ३ उनसे तिर्यक्लोक ३ में असंख्यातगुणा ४ उनसे त्रिलोक ४ में असंख्यातगुणा ५ उनसे ऊर्ध्वलोक ५ में असंख्यातगुणा

१—तिर्यक्लोक से उर्ध्वलोक में और उर्ध्वलोक से तिर्यक्लोक में उत्पन्न होने वाले जीव तथा इन दोनों प्रतरों में रहने वाले जीव ही यहाँ ग्रहण किये हैं। उर्ध्वलोक से अधोलोक में उत्पन्न होने वाले जीव यद्यपि इन दोनों प्रतरों का भी स्पर्श करते हैं पर वे यहाँ नहीं गिने हैं। इसलिये सबसे थोड़े हैं।

२—अधोलोक से तिर्यक्लोक में और तिर्यक्लोक से अधोलोक में उत्पन्न होने वाले जीव अधोलोक प्रतर और तिर्यक्लोक प्रतर दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं और इन दोनों प्रतरों में रहने वाले जीव यहां ग्रहण किये हैं। अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में उत्पन्न होने वाले जीव यद्यपि इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं पर उन्हें यहां नहीं गिना है। चूंकि ऊर्ध्वलोक से अधोलोक का क्षेत्र अधिक है इसलिये ऊर्ध्वलोक की अपेक्षा अधोलोक से तिर्यक्लोक में अधिक जीव उत्पन्न होते हैं इसलिये अधोलोक तिर्यक्लोक में विशेषाधिक कहे हैं।

३—अधोलोक तिर्यक्लोक क्षेत्र से तिर्यक्लोक का क्षेत्र असंख्यातगुणा अधिक होने से तिर्यक्लोक में असंख्यातगुणा बतलाये हैं।

४—विग्रह गति में मारणान्तिक समुद्घात कर ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में और अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में उत्पन्न होने वाले जीव ही यहां गिने हैं जो तिर्यक्लोक की अपेक्षा असंख्यातगुणा हैं।

५—ऊर्ध्वलोक में उपपात क्षेत्र अधिक होने से असंख्यातगुणा कहे हैं।

उनसे अधोलोक ६ में विशेषाधिक।

(२)—१ समुच्चय नारकीके नैरयिक सबसे थोड़े त्रि
में २ अधोलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यात
अधोलोक ३ में असंख्यातगुणा।

(३)—१ समुच्चय तिर्यच स्त्री, समुच्चय देवता, देव
बसे थोड़े उर्ध्वलोक १ × में

६—ऊर्ध्वलोक से अधोलोक का विस्तार विशेष है इसलिये
क में विशेषाधिक कहे हैं।

१—मेरुपर्वत, अंजन गिरि, दधिमुख पर्वत पर रही हुई वा
वर्तमान मत्स्य वगैरह नारकी का आयुष्य बांधकर अन्त सम
रणान्तिक समुद्घात कर नारकी में उत्पन्न होते हुए तीनों लो
र्श करते हैं जो सबसे थोड़े हैं।

२—तिर्यक्लोक के असंख्यात द्वीप समुद्रों में रहे हुए पं
र्यंच योनि के जीव नारकी में उत्पन्न होते हुऐ अधोलोक और
ोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं। मेरु आदि के क्षेत्र की
संख्यात द्वीप समुद्र रूप क्षेत्र असंख्यात गुणा हैं अतः
रकी में उत्पन्न होने वाले जीव भी असंख्यात गुणा हैं।

३—अधोलोक नैरयिकों के रहने का स्थान ही है अत
संख्यातगुणा हैं।

१×—मेरुगिरि तथा अंजन गिरि आदि पर्वतों की शिख
ावड़ियों में तिर्यंच स्त्रियां हैं जो थोड़ी हैं। ऊर्ध्वलोक में विमा
देवता देवांगना भी सबसे थोड़े हैं।

२ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यात गुणा ३ त्रिलोक ३ में संख्यात गुणा ४ अधोलोक तिर्यक्लोक ४ में संख्यात गुणा

---

२ ऊर्ध्वलोक से तिर्यक्लोक में तिर्यंच स्त्री रूप से उत्पन्न होने वाले देवी देवता तथा एकेन्द्रियादि उर्ध्वलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं। तिर्यक्लोक से उर्ध्वलोक में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच स्त्रियां भी दोनों प्रतरों का स्पर्श करती हैं। ये दोनों प्रतर ज्योतिषी देवों के समीप हैं इसलिये उनके स्वस्थान हैं। व्यन्तर ज्योतिषी देव ऊर्ध्वलोक में जाते हैं तो जाते आते हुए इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं। तिर्यक्लोक से सौधर्मादि कल्पों में तथा एकेन्द्रियादि में उत्पन्न होने वाले जीव भी इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं। अतः ऊर्ध्वलोक से ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक में असंख्यात गुणा हैं।

३ अधोलोक से भवनपति व्यन्तर और अन्य जीव भी ऊर्ध्वलोक में तिर्यंच स्त्री रूप से उत्पन्न होते हुए तथा ऊर्ध्वलोक के देव आदि भी अधोलोक में तिर्यंच स्त्री रूप से उत्पन्न होते हुए मारणान्तिक समुद्घात कर तीनों लोक का स्पर्श करते हैं।

४ अधोलोक से अनेक नैरयिकादि तिर्यक्लोक में तिर्यंच स्त्री आदि रूप से उत्पन्न होते हुए और तिर्यक्लोक के जीव तिर्यंच स्त्री रूप से अधोलोक के ग्रामों (सलिलावती विजय) में उत्पन्न होते हुए अधोलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं तथा कई तिर्यंच स्त्रियां इन दोनों प्रतरों में रहती हैं अतः ये संख्यातगुणी हैं। ये दोनों प्रतर भवनपति व्यन्तर देवों के समीप होने से उनके स्वस्थान हैं। बहुत से भवनपति देव तिर्यक्लोक में आते हुए तथा वैक्रिय समुद्घात कर दोनों प्रतर का स्प

५ अधोलोक ५ में संख्यातगुणा ६ तिर्यक्लोक ६ में संख्यात गुणा।

(४) १ मनुष्य और मनुष्य स्त्रियाँ सबसे थोड़ी त्रिलोक १ में २ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में मनुष्य असंख्यात गुणा, मनुष्य स्त्रियाँ संख्यातगुणी ३ अधोलोक तिर्यक्लोक ३ में संख्यातगुणा

करते हैं। तिर्यक्लोक में रहने वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य भवन-पति देवों में उत्पन्न होते हुए इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

५ अधोलोक में ग्राम और समुद्र १००० योजन गहरे हैं उनमें ६०० योजन तिर्यक्लोक में और सौ योजन अधोलोक में हैं। यहां मछली वगैरह बहुत सी तिर्यंच स्त्रियां हैं—यह उनका स्वस्थान है तथा क्षेत्र भी संख्यात गुणा है इसलिए इन्हे संख्यात गुणा कहा है। अधो-लोक में भवनपति का स्वस्थान है इसलिए संख्यात गुणा हैं।

६ तिर्यक्लोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं वहां तिर्यंच स्त्रियाँ बहुत हैं। तिर्यक्लोक व्यन्तर और ज्योतिषी देवों का स्वस्थान है इसलिए संख्यात गुणा हैं।

१ ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में उत्पन्न होते हुए मारणान्तिक समुद्घात करते हुए तथा केवली समुद्घात करते हुए तीनों लोक का स्पर्श करते हैं जो सबसे थोड़े हैं।

२ ऊर्ध्वलोक से वैमानिक देव तथा एकेन्द्रियादि मनुष्य में उत्पन्न होते हुए दोनों ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक के प्रतर स्पर्श करते हैं। विद्याधर भी मेरू पर्वत पर जाते हैं उनके शुक्र रुधिर आदि पुद्गलों में बहुत सम्मूर्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं। विद्याधर जब इन पुद्गलों के साथ जाते हैं तब सम्मूर्छिम मनुष्य भी इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं

४ ऊर्ध्वलोक ४ में संख्यात गुणा ५ अधोलोक ५ में संख्यात गुणा ६ तिर्यक्लोक ६ में संख्यात गुणा ।

(५)—१ भवनपति देव देवी सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक १ में

तिर्यक्लोक से ऊर्ध्वलोक में उत्पन्न होने वाले मनुष्य अन्त समय में मारणान्तिक समुद्घात कर आत्म प्रदेशों को ऊर्ध्वलोक में फैला देते हैं उस समय भी दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं इसलिए अधिक हैं।

३ अधोलोक के गांवों में स्वभावतः बहुत मनुष्य हैं। तिर्यक्लोक से मनुष्य एवं अन्य काय के जीव मर कर जब इन अधोलोक के गांवों में गर्भज और सम्मूर्छिम मनुष्य रूप से उत्पन्न होते हैं तो अधोलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर स्पर्श करते हैं। इसी तरह अधोलोक के गांवों (सलिलावती विजय) से तथा नारकी भवनपति आदि से तिर्यक्लोक में गर्भज और सम्मूर्छिम मनुष्य होकर उत्पन्न होते हैं तो इन दोनों प्रतरों को स्पर्श करते हैं। नीचे लोक में गांवों में कई मनुष्य स्वस्थान से भी इन दोनो प्रतरों का स्पर्श करते हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

४ मेरु पर्वत पर विद्याधर क्रीड़ा निमित्त जाते तथा चारण मुनि भी जाते हैं उनके शुक्र रुधिर आदि पुद्गलों में बहुत सम्मूर्छिम मनुष्य उत्पन्न हो सकते हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

५ अधोलोक में सलिलावती विजय है जो मनुष्यों का स्वस्थान है अतः संख्यात गुणा हैं।

६ तिर्यक्लोक का क्षेत्र संख्यातगुणा है। अढ़ाई द्वीप मनुष्य स्त्रियों का स्वस्थान है अतः संख्यात गुणा हैं।

१ भवनपति देव-देवियां पहले की मित्रता के कारण सौधर्मादि देव लोक में जाते हैं, तीर्थंकरों के जन्म महोत्सव पर मेरु पर्वत पर

२ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यातगुणा ३ त्रिलोक ३ में संख्यातगुणा ४ अधोलोक तिर्यक्लोक ४ में असंख्यातगुणा ५ तिर्यक्लोक ५ में असंख्यातगुणा ६ अधोलोक ६ में असंख्यात गुणा ।

जाते हैं क्रीडा निमित्त भी ये मेरू पर्वत पर जाते हैं अंजनगिरि दधिमुख पर्वत पर भी जाते हैं फिर भी ये थोड़े हैं ।

२ तिर्यक्लोक में रहे हुए भवनपतिदेव देवी वैक्रिय समुद्‌घात कर ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं । तिर्यक्लोक में रहे हुए मारणान्तिक समुद्‌घात कर ऊर्ध्वलोक में बादर पृथ्वीकायादि में उत्पन्न होते हुए भी ये उक्त दोनों प्रतर स्पर्श करते हैं । वैक्रिय समुद्‌घात करते हुए तथा क्रीड़ा स्थान पर जाते आते दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं ।

३ ऊर्ध्वलोक में रहे हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच भवनपति में उत्पन्न होते हुए मारणान्तिक समुद्‌घात कर तीनों लोक का स्पर्श करते हैं । भवनपति देव भी मारणान्तिक समुद्‌घात करते हुए तीनों लोक का स्पर्श करते हैं अतः संख्यातगुणा हैं ।

४ तिर्यक्लोक में गमनागमन करते हुए तथा समुद्‌घात करते हुए भवनपति देव अधोलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं । तिर्यक्लोक के तिर्यंच और मनुष्य मर कर भवनपतिदेव में उत्पन्न होते हुए इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं अतः असंख्यात गुणा हैं ।

५ समवसरण में वंदना निमित्त तथा तीर्थंकरों के पंच कल्याणक के अवसर पर भवनपति देव तिर्यक्लोक में आते हैं तथा रमणीय द्वीपों में भवनपति देव क्रीड़ा निमित्त आते हैं तथा वहीं पर चिर काल तक रहते हैं अतः असंख्यात गुणा हैं ।

(६) -१ व्यन्तर देव और देवी सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक [१] में २ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक [२] में असंख्यात गुणा ३ त्रिलोक [३] में संख्यातगुणा ४ अधोलोक तिर्यक्लोक [४] में असंख्यातगुणा

---

६ अधोलोक भवनपति देवताओं का स्वस्थान है अतः वह असंख्यात गुणा हैं।

१ तीर्थंकर भगवान के जन्म महोत्सव पर मेरू पर्वत पर जाते हैं तथा कुछ पण्डक वनादि में जाते हैं अतः ऊर्ध्वलोक में सबसे थोड़े हैं

२ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर कई व्यन्तर देव-देवियों के अपने स्थान के अन्दर हैं, कई देव देवियों के अपने स्थान के नजदीक है। मेरू पर्वत आदि पर जाते आते भी व्यन्तर देव देवियाँ इन दोनों प्रतर का स्पर्श करती हैं। ऊर्ध्वलोक के मच्छ कच्छ आदि मर कर व्यन्तर जाति के देव देवियों में उत्पन्न होते हुए इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं।

३ ऊर्ध्वलोक या अधोलोक में गये हुए व्यंतर देव देवी ऊर्ध्वलोक अथवा अधोलोक में उत्पन्न होने वाले अन्त समय में मारणान्तिक समुद्घात कर तीनों लोक का स्पर्श करते हैं जो पहले से बहुत अधिक हैं अतः संख्यातगुणा हैं।

४ अधोलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर कई व्यन्तर देव देवियों का स्वस्थान है इसलिये इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करने वाले बहुत हैं नीचे लोक के मच्छ कच्छ आदि तिर्यक्लोक में व्यन्तर देवों में उत्पन्न होते हुए इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं।

५ अधोलोक ५ में संख्यातगुणा ६ तिर्यक्लोक ६ मे
गुणा।

(७)—१ ज्योतिषी देव देवी सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक
२ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यात गुणा ३ त्रिलो
संख्यात गुणा ४ अधोलोक तिर्यक्लोक ४ में असंख्यात
अधोलोक ५ में संख्यातगुणा ६ तिर्यक्लोक ६ में अ
गुणा।

---

५ अधोलोक के ग्रामों में व्यन्तर देवों के अपने स्थान
क्रीड़ा निमित्त भी अधोलोक में जाते हैं। तीर्थंकर भगवान के
भी व्यन्तर देव देवी अधोलोक में जाते हैं।

६ तिर्यक्लोक व्यन्तर देव देवियों का स्वस्थान है इस
संख्यात गुणा हैं।

१ कुछ ज्योतिषी देव मेरू पर्वत पर तीर्थंकर भगवान के ज
त्सव पर जाते हैं तथा कई क्रीड़ा निमित्त जाते हैं अतः सबसे

२ ऊर्ध्वलोक जाते आते हुए इन दोनों प्रतरों का स्पर्श
दोनों प्रतरों का स्पर्श करने वाले ये ज्योतिषी देव देवी पूर्वोक्त
ख्यात गुणा हैं।

३ मारणान्तिक समुद्घात कर ज्योतिषी देव देवी तीनों
स्पर्श करते हैं जो स्वभावतः बहुत होते हैं अतः संख्यातगुणा

४ समवसरणादि निमित्त व क्रीड़ा निमित्त अधोलोक के
जाते हुए ज्योतिषी देव अधोलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर
करते हैं। अधोलोक से ज्योतिषियों में उत्पन्न होने वाले जीव
दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं अतः असंख्यात गुणा हैं।

(८)—१ वैमानिक देव देवी सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक १ में २ त्रिलोक २ में संख्यात गुणा ३ अधोलोक तिर्यक्लोक ३ में संख्यातगुणा ४ अधोलोक ४ में संख्यातगुणा ५ तिर्यक्लोक ५ में संख्यातगुणा ६ ऊर्ध्वलोक ६ में असंख्यातगुणा।

---

५ अधोलोक में क्रीड़ा निमित्त ज्योतिषी देव देवी दीर्घकाल तक रहते हैं तथा अधोलोक के गांवों में समवसरणादि में रहते हैं इसलिये संख्यातगुणा हैं।

६ तिर्यक्लोक ज्योतिषी देवों का अपना स्थान है अतः वे असंख्यात गुणा हैं।

१ तिर्यक्लोक के मनुष्य और तिर्यंच मरकर वैमानिक देवों में उत्पन्न होते हुए ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं। तिर्यक्लोक में गमनागमन करते हुए वैमानिक देव देवी इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं। इन दोनों प्रतर में रहे हुए स्थान पर गये हुए तथा तिर्यक्लोक में रह कर वैक्रिय तथा मारणान्तिक समुद्घात करते हुए वैमानिक देव देवी इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं इसलिए सबसे थोड़े हैं।

२ मारणान्तिक समुद्घात कर ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में उत्पन्न होते हुए वैमानिक देव देवी तीनों लोक का स्पर्श करते हैं अतः त्रिलोक में संख्यात गुणा हैं।

३ अधोलोक के गांवोंमें समवसरणादि निमित्त जाते आते हुए दोनों प्रतरों में स्थित समवसरणादि में चिरकाल तक रहते हुए अधोलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं अतः संख्यात गुणा

(९) समुच्चय तीन विकलेन्द्रिय, तीन विकलेन्द्रिय के र्याप्त और तीन विकलेन्द्रिय के अपर्याप्त १ सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक में २ उर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यातगुणा ३ तीन ोक ३ में असंख्यातगुणा

---

४ बहुत से वैमानिक देव देवी अधोलोक के गांवों में समवसरणादि रहते हैं कारणवश भवनपति देवों के भवनों में तथा नरक में जाते हैं सलिए संख्यात गुणा हैं।

५ तिर्यक्लोक में मनुष्य क्षेत्र में जघन्य २० उत्कृष्ट १७० तीर्थंकर ागवान हैं उनके पंच कल्याणक के अवसर पर तथा दर्शन निमित्त ाते हैं, समवसरण में रहते हैं तथा क्रीड़ा के स्थानों में रहते हैं सलिये संख्यातगुणा हैं।

६ ऊर्ध्वलोक वैमानिक देवों का स्वस्थान है वहां सदा अधिकतर ामानिक देवदेवी रहते हैं अतः असंख्यातगुणा हैं।

१ ऊर्ध्वलोक के एक देश में यानी मेरू पर्वत की वावड़ी में विकले-न्द्रिय हैं, इसलिये सबसे थोड़े हैं।

२ ऊर्ध्वलोक से तिर्यक्लोक में और तिर्यक्लोक से ऊर्ध्वलोक में उत्पन्न होने वाले द्वीन्द्रियादि विकलेन्द्रिय ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक के दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं कई विकलेन्द्रिय इन दोनों प्रतरों के क्षेत्र में रहे हुए हैं। इसलिए दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं अतः असंख्यात गुणा हैं।

३ अधोलोक से ऊर्ध्वलोक और ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में जो विकलेन्द्रिय मारणान्तिक समुद्घात कर एकेन्द्रिय में उत्पन्न होने वाले

४ अधोलोक तिर्यक्लोक ४ में असंख्यातगुणा ५ अधोलोक ५ में संख्यातगुणा ६ तिर्यक्लोक ६ में संख्यातगुणा।

(१०) समुच्चय त्रस, त्रस के पर्याप्त, त्रस के अपर्याप्त समुच्चय पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त १ सत्रसं थोड़े त्रिलोक १ में

हैं तथा जो एकेन्द्रियादि विकलेन्द्रिय रूप में उत्पन्न होने वाले हैं वे मारणान्तिक समुद्घात कर तीनों लोक का स्पर्श करते हैं। ये पहले से असंख्यात गुणा हैं।

४ अधोलोक से तिर्यक्लोक में तथा तिर्यक्लोक से अधोलोक विकलेन्द्रिय रूप से उत्पन्न होने वाले विकलेन्द्रिय की आयु वेदते हुए इलिका गति से उत्पन्न होते हैं वे अधोलोक और तिर्यक्लोक के दो प्रतरों का स्पर्श करते हैं तथा जो द्वीन्द्रियादि तिर्यक्लोक से अधोलोक में और अधोलोक से तिर्यक्लोक में एकेन्द्रियादि रूप में उत्पन्न होने वा... वे पहला मारणान्तिक समुद्घात कर विकलेन्द्रिय की आयु वेदते हुए उत्पत्ति देश पर्यन्त आत्म प्रदेशों को फैलाते हुए इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं ऐसे जीव बहुत हैं अतः असंख्यातगुणा हैं।

५ विकलेन्द्रिय के उत्पत्ति स्थान अधोलोक में बहुत हैं। सभी समुद्र १००० योजन गहरे हैं। नीचे के १०० योजन अधोलोक में हैं वहां बहुत से विकलेन्द्रिय उत्पन्न होते हैं अतः संख्यातगुणा हैं।

६ तिर्यक्लोक में द्वीप समुद्र बहुत हैं। यहां विकलेन्द्रिय के उत्पत्ति स्थान और भी अधिक हैं अतः संख्यातगुणा हैं।

(१) अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में और ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में

२ उर्ध्वलोक तिर्यकलोक में संख्यातगुणा ३ अधोलोक
लोक ३ में संख्यात गुणा। ४ ऊर्ध्वलोक ४ में संख्यात-
५ अधोलोक ५ में संख्यात गुणा ६ तिर्यक्लोक ६ में
यात गुणा।

ौर पंचेन्द्रिय रूप से उत्पन्न होने वाले जीव मारणान्तिक
ात कर उत्पत्ति प्रदेश पर्यन्त आत्म प्रदेशों को फैला देते हैं। ये
प्रकार के त्रस और पंचेन्द्रिय तीनों लोक का स्पर्श करते हैं।
से थोड़े हैं।

२) ऊर्ध्वलोक से तिर्यक्लोक में और तिर्यक्लोक से ऊर्ध्वलोक में
। होने वाले ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श
हैं। ये जीव वैक्रिय और मारणान्तिक समुद्घात द्वारा भी दोनों
का स्पर्श करते हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

३) अधोलोक से तिर्यक्लोक में और तिर्यक्लोक से अधोलोक में
। होने वाले अधोलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श
हैं तथा वैक्रिय और मारणान्तिक समुद्घात द्वारा भी दोनों प्रतर
र्श करते हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

४) ऊर्ध्वलोक में वैमानिक देवों के शाश्वत स्थान हैं तथा मेरू
तथा अंजनादिक पर्वतों की वावड़ियों में तिर्यंच हैं अतः संख्यात
हैं।

५) अधोलोक में चार पाताल कलश हैं, सलिलावती विजय एक
: योजन ऊँडी है तथा सभी समुद्र एक हजार योजन गहरे हैं वहां
। जीव वहुत हैं अतः संख्यात गुणा हैं।

६) तिर्यक्लोक में तिर्यंच वहुत हैं अतः संख्यातगुणा हैं।

(११) पंचेन्द्रिय के पर्याप्त—१ सबसे थोड़े ऊर्ध्वलोक में २ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक २ में असंख्यात गुणा ३ त्रिलो ३ में संख्यातगुणा ४ अधोलोक तिर्यक् लोक ४ में संख्यातगु ५ अधोलोक

---

(१) ऊर्ध्वलोक में प्रायः वैमानिक ही हैं अतः पंचेन्द्रिय के पर्या सबसे थोड़े हैं

(२) ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतरों के समीप ज्यो देव हैं। वैमानिक व्यन्तर ज्योतिषी देव विद्याधर चारण मुनि तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऊर्ध्वलोकसे तिर्यक्लोक में और तिर्यक्लोकसे ऊर्ध्व में जाते आते इन दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं अतः असंख्यातगुणा

(३) अधोलोक में रहे हुए भवनपति व्यंतर ज्योतिषी और वैमा देव तथा विद्याधर मारणान्तिक समुद्घात कर ऊर्ध्वलोक तक उ प्रदेश फैलाते हुए तीनों लोक का स्पर्श करते हैं अतः संख्यातगुणा

(४) बहुत से व्यन्तर देव अपने स्थान के समीप होने से अधो और तिर्यक्लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं। भवनपति अधोलोक से तिर्यक्लोक में जाते आते तथा व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक देव अधोलोक के ग्रामों में समवसरणादि में तथा अधो में क्रीड़ा निमित्त जाते आते इन दोनों प्रतरों का स्पर्श करते हैं समुद्रों में कई तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपने स्थान इन दोनों प्रतरों के सम होने से तथा कई इन दोनों प्रतरों से आश्रित क्षेत्र में रहने से इन दो प्रतरों का स्पर्श करते हैं अतः संख्यातगुणा हैं।

में संख्यातगुणा ६ तिर्यक्‌लोक ६ में असंख्यातगुणा।

क्षेत्र सम्बन्धी अल्प बहुत्व

(१२) क्षेत्र की अपेक्षा पुद्‌गल द्रव्यरूप से (दव्वट्ठयाए) सबसे थोड़े तीन लोक १ में २ ऊर्ध्वलोक तिर्यक्‌लोक २ में नन्तगुणा ३ अधोलोक तिर्यक्‌लोक ३ में विशेषाधिक। ४ र्यक्‌लोक ४ में असंख्यातगुणा ५ ऊर्ध्वलोक ५ में असंख्यात गा ६ अधोलोक ६ में विशेषाधिक।

---

(५) अधोलोक में नैरयिक और भवनपतियों के अपने स्थान हैं तः संख्यातगुणा हैं।

(६) तिर्यक्‌लोक में तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य व्यन्तर और ज्योतियों के स्वस्थान है अतः यहां असंख्यातगुणा हैं।

(१) तीन लोक में व्याप्त अचित्त महास्कन्ध सबसे थोड़े हैं।

(२) अनन्त संख्यातप्रदेशी, अनन्त असंख्यातप्रदेशी और अनन्त नन्त प्रदेशी स्कन्ध ऊर्ध्वलोक और तिर्यक्‌लोक के दोनों प्रतर का र्श करते हैं अतः अनन्तगुणा हैं।

(३) ऊर्ध्वलोक तिर्यक्‌लोक की अपेक्षा अधोलोक तिर्यक्‌लोक का त्र कुछ अधिक है अतः विशेषाधिक हैं।

(४) तिर्यक्‌लोक का क्षेत्र असंख्यातगुणा है अतः पुद्‌गल भी संख्यातगुणा हैं।

(५) तिर्यक्‌लोक से ऊर्ध्वलोक का क्षेत्र असंख्यातगुणा होने से द्‌गल भी असंख्यातगुणा हैं।

(६) ऊर्ध्वलोक से अधोलोक का क्षेत्र विशेष अधिक है। ऊर्ध्वलोक ात राजू से कुछ कम है अधोलोक सात राजू से कुछ अधिक है तः पुद्‌गल भी विशेषाधिक हैं।

(१३) दिशा की अपेक्षा पुद्गल १ सबसे थोड़े ऊर्ध्व दिशा १ में २ अधोदिशा २ में विशेपाधिक ३ उत्तर पूर्व (ईशान कोण) और दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य कोण) दिशा ३ में परस्पर तुल्य असंख्यात गुणा ४ दक्षिण पू (आग्नेय कोण) और उत्तर पश्चिम (वायव्य कोण) दिशा में परस्पर तुल्य विशेपाधिक ५ पूर्व दिशा ५ में असंख्यातगुणा

---

(१) रत्नप्रभा के समतल मेरुप्रदेश में आठ रुचक प्रदेश हैं उनसे चार प्रदेश वाली ऊर्ध्वदिशा लोकान्त तक गई हुई है अतः ऊर्ध्वदिशा में पुद्गल सबसे थोड़े हैं।

(२) अधोदिशा भी चार प्रदेश वाली है वह भी रुचक प्रदेशों से निकल कर नीचे लोकान्त तक गई है। अधोदिशा का क्षेत्र ऊर्ध्वदिशा से विशेपाधिक है अतः अधोदिशा में पुद्गल भी विशेपाधिक हैं।

(३) ये दोनों दिशाएँ रुचक प्रदेश से निकली हैं, मुक्तावली के आकार की हैं और तिर्यक्लोक ऊर्ध्वलोक और अधोलोक पर्यन्त गई हैं। इन दिशाओं में अधोदिशा की अपेक्षा असंख्यातगुणा क्षेत्र अतः पुद्गल भी असंख्यातगुणा हैं। दोनों दिशाओं का क्षेत्र बरा है अतः दोनों में पुद्गल भी बराबर हैं अतः परस्पर तुल्य हैं।

(४) यहां सौमनस और गंध मादन पर्वतों पर सात-सात कू हैं जबकि ईशान कोण और नैऋत्य कोण में विद्युत्प्रभा और माल्यव पर्वत पर नौ नौ कूट हैं। सौमनस और गंधमादन पर्वत पर दो कूट कम होने से धूंवर और ओस आदि के सूक्ष्म पुद्गल बहुत हैं अ विशेपाधिक हैं। दोनों दिशाओं में क्षेत्र समान है अतः परस्पर तुल्य हैं

(५) पूर्व दिशा का क्षेत्र असंख्यात गुणा होने से इसमें पुद्गल असंख्यात गुणा हैं।

६ पश्चिम दिशा ६ में विशेपाधिक ७ दक्षिण दिशा ७ में विशेपाधिक ८ उत्तर दिशा ८ में विशेपाधिक ।

(१४) क्षेत्र की अपेक्षा द्रव्य—१ सबसे थोड़े त्रिलोक १ में २ ऊर्ध्व लोक तिर्यक्‌लोक २ में अनन्त गुणा ३ अधोलोक तिर्यक्‌लोक३ में विशेपाधिक ४ ऊर्ध्वलोक ४ में असंख्यात गुणा

---

(६) पश्चिम दिशा में अधोलोक के गांवों में पोलार बहुत है इसलिये इनमें बहुत पुद्‌गल हैं अतः विशेपाधिक हैं।

(७) दक्षिण दिशा में भवनपतियों के भवन बहुत हैं उनमें पोलार बहुत है अतः पुद्‌गल विशेपाधिक हैं।

(८) उत्तर दिशा में संख्यात कोटि-कोटि (कोड़ा-कोड़ी) योजन प्रमाण मानसरोवर है जिसमें सात बोल के समुच्चय जीव, अप्काय, वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव बहुत हैं उनमें तैजस कार्माण पुद्‌गल अधिक पाये जाते हैं अतः विशेपाधिक हैं।

(१) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्‌गलास्तिकाय का महास्कन्ध और जीवास्तिकाय में मारणान्तिक समुद्‌घात द्वारा समुद्‌घात करने वाले जीव तीनों लोक का स्पर्श करते हैं अतः ये सबसे थोड़े हैं।

(२) अनन्त पुद्‌गल द्रव्य और अनन्त जीव द्रव्य ऊर्ध्वलोक तिर्यक्‌ लोक के दोनों प्रतर का स्पर्श करते हैं अतः अनन्त गुणा हैं।

(३) ऊर्ध्वलोक तिर्यक्‌लोक की अपेक्षा अधोलोक तिर्यक्‌लोक का क्षेत्र विशेपाधिक होने से इन दोनों प्रतर में द्रव्य भी विशेपाधिक हैं।

(४) ऊर्ध्वलोक का क्षेत्र असंख्यात गुणा है अतः यहां द्रव्य भी असंख्यात गुणा हैं।

५ अधोलोक[५] में अनन्तगुणा ६ तिर्यक्लोक[६] में संख्यातगुणा।

(१५) दिशा की अपेक्षा द्रव्य १ सबसे थोड़े अधोदिशा[१] में २ ऊर्ध्व दिशा[२] में अनन्त गुणा ३ उत्तर पूर्व (ईशान कोण) और दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य कोण)[३] में परस्पर तुल्य असंख्यात गुणा ४ दक्षिण पूर्व (आग्नेय कोण) और उत्तर पश्चिम (वायव्य कोण)[४] में परस्पर तुल्य विशेषाधिक

---

(५) अधोलोक के गांवों में काल है परमाणु, संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, अनन्त प्रदेशी स्कन्ध के द्रव्य क्षेत्र काल भाव और पर्याय के साथ काल का सम्बन्ध होने से प्रत्येक परमाणु आदि द्रव्य की अपेक्षा अनन्त काल है अतः अधोलोक में अनन्त गुणा हैं।

(६) तिर्यक् लोक में मनुष्य लोक है जहां काल है। मनुष्य लोक में अधोलोक के गांव प्रमाण संख्यात खण्ड हैं अतः तिर्यक्लोक में संख्यात गुणा हैं।

(१) अधोदिशा में काल नहीं होने से वहां द्रव्य सबसे थोड़े हैं।

२ ऊर्ध्व दिशा में मेरु पर्वत का ५०० योजन का स्फटिकमय काण्ड है। वहां चन्द्र सूर्य की प्रभा का प्रवेश होने से काल द्रव्य है। यह काल प्रत्येक परमाणु आदि द्रव्यों पर अनन्त अनन्त है अतः ऊर्ध्वलोक में द्रव्य अनन्त गुणा हैं।

(३) इनका क्षेत्र असंख्यात गुणा होने से द्रव्य असंख्यात गुणा हैं। दोनों दिशा में क्षेत्र बराबर होने से परस्पर द्रव्य तुल्य हैं।

(४) सौमनस और गंधमादन पर्वत पर सात-सात कूट हैं दो-२ कूट कम होने से वहां धूंवर, ओस आदि के सूक्ष्म पुद्गल द्रव्य बहुत हैं अतः विशेषाधिक हैं।

पूर्व दिशा[५] में असंख्यात गुणा ६ पश्चिमदिशा[६] में विशेषा-
क ७ दक्षिणदिशा[७] में विशेषाधिक ८ उत्तर दिशा[८] में
शेषाधिक ।

१ अधोदिशा में काल नहीं होने से वहाँ द्रव्य सबसे
ड़े हैं ।

२ ऊर्ध्वदिशा में मेरुपर्वत का ५०० योजन का
ःटिकमय काण्ड है । वहाँ चंद्र सूर्य की प्रभा का प्रवेश
ने से काल द्रव्य है । यह काल प्रत्येक परमाणु आदि
यों पर अनन्त-अनन्त है अतः ऊर्ध्वलोक में द्रव्य अनन्त
ुणा हैं ।

३ इनका क्षेत्र असंख्यात गुणा होने से द्रव्य असंख्यात
ुणा हैं । दोनों दिशा में क्षेत्र बराबर होने से परस्पर
य तुल्य हैं ।

---

५ पूर्व दिशा का क्षेत्र असंख्यात गुणा है अतः इस दिशा में
द्य भी असंख्यात गुणा हैं ।

६ पश्चिम दिशा में अधोलोक के गांवों में पोलार अधिक होने
बहुत पुद्गल द्रव्यों का सम्भव है अतः विशेषाधिक हैं ।

७ दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के ४०६,००,००० (चार
रोड़ छह लाख) भवन हैं । पोलार अधिक होने से द्रव्य भी
वशेषाधिक हैं ।

८ मान सरोवर में सात बोल के जीव अधिक हैं उन जीवों के
ाश्रित तैजस कार्मण वर्गणा के पुद्गल द्रव्य भी बहुत हैं अतः
वशेषाधिक हैं ।

४ सौमनस और गंधमादन पर्वत पर सात-सात कूट हैं दो-दो कूट कम होने से वहाँ धूँवर, ओस आदि के सूक्ष्म पुद्गल द्रव्य बहुत हैं अतः विशेषाधिक हैं।
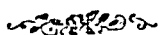
(८) २५६ राशि (ढगला) का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

यद्यपि सम्पूर्ण जीव राशि अनन्तानन्त है किन्तु असत् कल्पना से उसकी २५६ राशि मान कर इस थोकड़े में आयु के बंधक अबंधक आदि चौदह बोलों का परिमाण एवं अल्प बहुत्व कहे गये हैं।

(१) आयु के बंधकों की एक राशि, आयु के अबन्धकों की २५५ राशि।

(२) अपर्याप्त +(लब्धि अपर्याप्त) की २ राशि, पर्याप्त की २५४ राशि।

(३) सुप्त *(सोतेहुए) की ४ राशि, जागृत (जागने वालों) की २५२ राशि।

(४) समुद्घात (मरण समुद्घात) करने वालों की ८ राशि, समुद्घात नहीं करने वालों की २४८ राशि

+अपर्याप्त दो तरह के होते हैं— १ लब्धि अपर्याप्त—जो अपर्याप्त अवस्था में ही मरते हैं और २ करण अपर्याप्त-जो पर्याप्त होकर मरते हैं। यहां अपर्याप्त से लब्धि अपर्याप्त लिए हैं।

*यहां सुप्त से दोनों लब्धि और करण अपर्याप्त लिए गये हैं।

(५) सातावेदनीय वेदने (भोगने) वालों की १६ राशि, असाता वेदनीय वेदने (भोगने) वालों की २४० राशि ।

(६) इन्द्रिय उपयोग वालों की ३२ राशि, नो इन्द्रिय उपयोग वालों की २२४ राशि ।

(७) अनाकार (दर्शन) उययोग वालों की ६४ राशि, साकार (ज्ञान) उपयोग वालों की १६२ राशि ।

१ सबसे थोड़े आयु के बंधक, आयु के अबंधक संख्यात गुणा । २ सबसे थोड़े अपर्याप्त, पर्याप्त संख्यातगुणा । ३ सबसे थोड़े सुप्त, जागृत संख्यातगुणा । ४ सबसे थोड़े समुद्घात करने वाले, समुद्घात न करने वाले संख्यात गुणा ५ सबसे थोड़े सातावेदनीय वेदने वाले, असातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा । ६ सबसे थोड़े इन्द्रिय उपयोग वाले, नो इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा ७ सबसे थोड़े अनाकार उपयोग वाले, साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा ।

चौदह बोलों की सम्मिलित अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़े आयु के बन्धक २ अपर्याप्त संख्यात गुणा ३ सुप्त संख्यात गुणा ४ समुद्घात करने वाले संख्यात गुणा ५ सातावेदनीय वेदने वाले संख्यात गुणा ६ इन्द्रिय उपयोग वाले संख्यात गुणा ७ अनाकार उपयोग वाले संख्यात गुणा ८ साकार उपयोग वाले संख्यात गुणा ६ नोइन्द्रिय उपयोग वाले विशेषाधिक १० असाता वेदनीय वेदने वाले विशेषाधिक

प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा ४ असंख्यात प्रदेशावगा
पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा ५ असंख्यात प्रदेशा
वगाढ़ पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा।

काल की तीन अल्प बहुत्व—एक समय की स्थि
वाले, संख्यात समय की स्थिति वाले और असंख्यात सम
की स्थिति वाले पुद्गलों की द्रव्य की अपेक्षा, प्रदेश क
अपेक्षा तथा द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा अल्पबहुत्व—

१ सबसे थोड़े एक समय की स्थिति वाले पुद्गल द्र
की अपेक्षा २ संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल द्र
की अपेक्षा संख्यात गुणा ३ असंख्यात समय की स्थि
वाले पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा।

१ सबसे थोड़े एक समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदे
की अपेक्षा २ संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदे
की अपेक्षा संख्यात गुणा ३ असंख्यात समय की स्थि
वाले पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा।

१ सबसे थोड़े एक समय की स्थिति वाले पुद्गल द्र
और प्रदेश की अपेक्षा २ संख्यात समय की स्थिति वा
पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा ३ संख्यात समय की
स्थिति वाले पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा ४ असं-
ख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असं-
ख्यात गुणा ५ असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल प्रदेश
की अपेक्षा असंख्यात गुणा।

भाव की ६० अल्प वहुत्व—

वर्ण, गंध और रस की अपेक्षा ३६ अल्प वहुत्व—

एक गुण काले, संख्यात गुण काले, असंख्यात गुण काले और अनन्त गुण काले वर्ण वाले पुद्गलों की द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेश की अपेक्षा अल्प वहुत्व—

१ सवसे थोड़े अनन्त गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा २ एक गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा अनन्त गुणा ३ संख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा ४ असंख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा ।

१ सवसे थोड़े अनन्त गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा २ एक गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुण ३ संख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा ४ असंख्यात गुण काले वर्ण वाले पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा ।

द्रव्य प्रदेश की अपेक्षा सम्मिलित अल्प वहुत्व—

१ सवसे थोड़े अनन्त गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा २ अनन्त गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा ३ एक गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य और अप्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा ४ संख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा ५ संख्यात

गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा ६ असंख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा ७ असंख्यात गुण काले वर्ण के पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा ।

काले वर्ण की ऊपर द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेश की अपेक्षा-तीन अल्प बहुत्व कही उसी तरह शेष चार वर्ण दो गंध और पांच रस प्रत्येक की तीन-तीन अल्प बहुत्व कहनी चाहिए । इस तरह पाँच वर्ण, दो गंध और पाँच रस की ३६ अल्प बहुत्व हुई ।

आठ स्पर्श की चौबीस अल्प बहुत्व—कर्कश स्पर्श के पुद्गलों की द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेश की अपेक्षा अल्प बहुत्व —

१ सबसे थोड़े एक गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा २ संख्यात गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा ३ असंख्यात गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा ४ अनन्त गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा अनन्त गुणा ।

१ सबसे थोड़े एक गुण कर्कश पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा २ संख्यात गुण कर्कश पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा ३ असंख्यात गुण कर्कश पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा ४ अनन्त गुण कर्कश पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा ।

१ सबसे थोड़े एक गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य प्रदेश की
पेक्षा २ संख्यात गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा
ख्यात गुण ३ संख्यात गुणा कर्कश पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा
ख्यात गुणा ४ असंख्यात गुण कर्कश पुद्गल द्रव्य की
पेक्षा असंख्यात गुणा ५ असंख्यात गुण कर्कश पुद्गल
देश की अपेक्षा असंख्यात गुणा ६ अनन्त गुण कर्कश पुद्-
ल द्रव्य की अपेक्षा अनन्त गुणा ७ अनन्त गुण कर्कश पुद्-
ल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा । जिस तरह कर्कश को
पर तीन अल्प बहुत्व कही उसी तरह मृदु, गुरु, लघु की
ीन-तीन अल्प बहुत्व कह देनी चाहिए ।

शीत स्पर्श की द्रव्य, प्रदेश और द्रव्य प्रदेश की अपेक्षा
ल्प बहुत्व—

सबसे थोड़े अनन्त गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा
२ एक गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा अनन्त गुणा
३ संख्यात गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा
४ असंख्यात गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा
१ सबसे थोड़े अनन्त गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा
२ एक गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा
३ संख्यात गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा
४ असंख्यात गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा
१ सबसे थोड़े अनन्त गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा
२ अनन्त गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा

३ एक गुण शीत पुद्गल द्रव्य और अप्रदेश की अपेक्षा अनन्त गुणा

४ संख्यात गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा संख्यात गुणा

५ संख्यात गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा संख्यात गुणा

६ असंख्यात गुण शीत पुद्गल द्रव्य की अपेक्षा असंख्यात गुणा

७ असंख्यात गुण शीत पुद्गल प्रदेश की अपेक्षा असंख्यात गुणा

शीत स्पर्श की ये तीन अल्प बहुत्व कही उसी तरह उष्ण स्पर्श, स्निग्ध स्पर्श और रूक्ष स्पर्श की अल्प बहुत्व भी कह देनी चाहिए।

इस प्रकार आठ स्पर्श की २४ अल्प बहुत्व हुई। कुल ३+३+३+६०=६९ अल्प बहुत्व हुई।

१०—अठाणवे बोलों का बासठिया

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

प्रज्ञापना सूत्र में अठाणवे बोल की केवल अल्प बहुत्व बताई गई है परन्तु यहाँ प्रचलित थोकड़े के अनुसार अठाणवे बोलों में जीव के भेद १४, गुणस्थान १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६, तथा एक निज का बोल ये ६२ बोल बताये जाते हैं।

१-२—(१) सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य उससे (२) मनुष्य स्त्री संख्यात गुणी। इनमें प्रत्येक में जीव के भेद २ गुण-

स्थान १४ योग मनुष्य में १५ और मनुष्य स्त्री में १३ (आहारक, आहारक मिश्र नहीं पावे) उपयोग इन में प्रत्येक में १२ लेश्या ६।

३—बादर तेजस्काय के पर्याप्त असंख्यात गुणा। इनमें जीव का भेद १, गुणस्थान १, योग १ (औदारिक काय योग), उपयोग ३, लेश्या ३ (पहली)।

४—पाँच अनुत्तर विमान के देवता असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद २ (१३,१४) गुणस्थान १ (४) योग ११ (दो औदारिक और दो आहारक के वर्जे) उपयोग ६ (३ ज्ञान ३ दर्शन) लेश्या १ (शुक्ल)।

५ से ७–(५) नवग्रैवेयक की ऊपर की त्रिक के देवता संख्यात गुणा (६)मध्यक की त्रिक के देवता संख्यात गुणा (७) नीचे की त्रिक के देवता संख्यात गुणा। इनमें प्रत्येक में जीव के भेद २ (१३,१४), गुणस्थान २ या ३ (१,४ अथवा १,२,४), योग ११, उपयोग ९ (३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन) लेश्या १ (शुक्ल)।

८ से ११—(८) बारहवें देवलोक के देवता संख्यात गुणा (९) ग्यारहवें देवलोक के देवता संख्यात गुणा (१०) दसवें देवलोक के देवता संख्यात गुणा (११) नवें देवलोक के देवता संख्यात गुणा। इन चारों बोलों में प्रत्येक में जीव के भेद २ (१३-१४) गुणस्थान ४ पहले, योग ११, उपयोग ९, लेश्या १ (शुक्ल)।

१२-१३–(१२) सातवीं नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा (१३) छट्ठी नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा। इन दोनों बोल में प्रत्येक में जीव के भेद २ (१३,१४) गुणस्थान ४ पहले, योग ११, उपयोग ६, लेश्या १, (कृष्ण)।

१४-१५–(१४) आठवें देवलोक के देवता असंख्यात गुणा (१५) सातवें देवलोक के देवता असंख्यात गुणा। इनमें प्रत्येक में जीव के भेद २ गुणस्थान ४ पहले, योग ११, उपयोग ६ लेश्या १ (शुक्ल)।

१६–पाँचवीं नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ पहले, योग ११ उपयोग ६ लेश्या २ (नील और कृष्ण-नील लेश्या वाले बहुत कृष्ण लेश्या वाले थोड़े)।

१७–छठे देवलोक के देवता असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या १ शुक्ल।

१८–चौथी नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या १ (नील)।

१६–पाँचवें देवलोक के देवता असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या १ पद्म।

२०–तीसरी नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा।

इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्य (कापोत लेश्या नील लेश्या-कापोत लेश्या वाले बहुत, नं लेश्या वाले थोड़े)।

२१-२२—(२१) चौथे देवलोक के देवता असंख्यात गु (२२) तीसरे देवलोक के देवता असंख्यात गुणा। इन प्रत्येक में जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग लेश्या १ पद्म।

२३—दूसरी नारकी के नैरयिक असंख्यात गुण इनमें जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग लेश्या १ कापोत।

२४—सम्मूर्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा। इनमें जं का भेद १ (११) गुणस्थान १ पहला, योग ३ (औदारि के दो व कार्मण) उपयोग * ४ (दो अज्ञान दो दर्श लेश्या ३ पहली।

२५ से २८—(२५) दूसरे देवलोक के देवता असंख्य गुणा (२६) दूसरे देवलोक की देवियाँ संख्यात गुणी (२ पहले देकलोक के देवता संख्यात गुणा (२८) पहले देवलो की देवियाँ संख्यात गुणी। इन चारों बोलों में प्रत्येक में जी के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या १ तेजो

२९-३०—(२९) भवन पति देवता असंख्यात गुर

---

* कोई आचार्य संमूर्छिम में चक्षुदर्शन नहीं मानते हैं अ उनके अनुसार संमूर्छिम में ३ उपयोग होते हैं।

(३०) भवन पति की देवियाँ संख्यात गुणी। भवन पति देवता में जीव के भेद तीन (११,१३,१४) भवन पति की देवियों में दो (१३,१४) इनमें प्रत्येक में गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या ४ पहली।

३१—पहली नारकी के नैरयिक असंख्यात गुणा। इनमें जीव के भेद ३ (११,१३,१४) गुणस्थान ४ योग ११ उपपोग ६ लेश्या १ कापोत।

३१ से ३७—(३२) खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा (३३) खेचर तिर्यंच स्त्री संख्यात गुणी (३४) स्थलचर तिर्यंच पुरुष संख्यात गुणा (३५) स्थलचर तिर्यंच स्त्री संख्यात गुणी (३६) जलचर तिर्यंच पुरुष संख्यात गुणा (३७) जलचर तिर्यंच स्त्री संख्यात गुणी। इन छह बोलों में प्रत्येक में जीव के भेद २ गुणस्थान ५ योग १३ उपयोग ६ लेश्या ६।

३८-३६—(३८) व्यन्तर देवता संख्यात गुणा (३६) व्यन्तर देवियाँ संख्यात गुणी। जीव के भेद देवता में ३ देवियों में २ इनमें प्रत्येक में गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या ४ पहली।

४०-४१—(४०) ज्योतिषी देवता संख्यात गुणा (४१) ज्योतिषी देवियाँ संख्यात गुणी। इनमें प्रत्येक में जीव के भेद २ गुणस्थान ४ योग ११ उपयोग ६ लेश्या १ तेजो।

४२ से ४४—(४२) खेचर तिर्यंच नपुंसक संख्यात गुणा

(४३) स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यात गुणा (४४) जलचर
तिर्यंच नपुंसक संख्यात गुणा। इन तीनों बोलों में प्रत्येक में
जीव के भेद २ तथा ४ (दो पावे तो १३,१४ चार पावे तो
११,१२,१३,१४), गुणस्थान ५ योग १३ उपयोग ९ लेश्या ६

४५-- चतुरिन्द्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा। इन में जीव
का भेद १ गुणस्थान १ योग २ (व्यवहार वचन योग और
औदारिक काय योग) उपयोग ४ लेश्या ३ पहली।

४६--पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक। इनमें जीव के
भेद २ (१२,१४) गुणस्थान १२, योग १४ (कार्मण के
सिवा) उपयोग १०, लेश्या ६।

४७-४८-(४७) द्वीन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक (४८)
त्रीन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक। इनमें प्रत्येक में जीव का
भेद १ गुणस्थान १ योग २ (व्यवहार वचन योग और औदा-
रिक काय योग) उपयोग ३ लेश्या ३ पहली।

४९--पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा। इनमें जीव
के भेद २ (११,१३) गुणस्थान ३ (१,२,३,) योग ५ (दो
औदारिक दो वैक्रिय और कार्मण) उपयोग ८ तथा ९ (३
ज्ञान, ३ अज्ञान अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, नौ पावे तो
चक्षुदर्शन बढ़ा), लेश्या ६।

५० से ५२-(५०) चतुरिन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक
(५१) त्रीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक (५२) द्वीन्द्रिय के
अपर्याप्त विशेषाधिक। इनमें प्रत्येक में जीव का भेद १

अपना-अपना, गुणस्थान २ (१-२) योग ३ (दो औदारिक के व कार्मण) उपयोग द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय में ५, चतुरिन्द्रिय में ६, लेश्या प्रत्येक में ३ पहली ।

५३ से ५७-(५३) प्रत्येक शरीर वादर वनस्पति काय के पर्याप्त असंख्यात गुणा (५४) वादर निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुणा (५५) वादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा (५६) वादर अप्काय के पर्याप्त असंख्यात गुणा (५७) वादर वायुकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा । इनमें प्रत्येक में जीव का भेद १ गुणस्थान १ योग चार में १ (औदारिक काय योग) वादर वायुकाय के पर्याप्त में चार (दो औदारिक के दो वैक्रिय के) प्रत्येक में उपयोग ३ लेश्या ३ पहली ।

५८ से ६३-(५८) वादर तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (५९) प्रत्येक शरीर वादर वनस्पति काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (६०) वादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (६१) वादर पृथ्वीकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (६२) वादर अप्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (६३) वादर वायुकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा इनमें प्रत्येक में जीव का भेद १ गुणस्थान १ योग ३ (दो औदारिक के व कार्मण) उपयोग ३ लेश्या-पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पति काय में चार पहली, तेजस्काय, वायुकाय व निगोद में ३ पहली ।

६४ से ७३—(६४) सूक्ष्म तेजस्काय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (६५) सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक (६६) सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त विशेषाधिक (६७) सूक्ष्म वायुकाय के अपर्याप्त विशेषाधिक (६८) सूक्ष्म तेजस्काय के पर्याप्त संख्यात गुणा (६९) सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त विशेषाधिक (७०) सूक्ष्म अप्काय के पर्याप्त विशेषाधिक (७१) सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त विशेषाधिक (७२) सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यात गुणा (७३) सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यात गुणा। इनमें प्रत्येक में जीव का भेद १ (अपना-अपना) गुणस्थान १ योग अपर्याप्त में ३ (दो औदारिक व कार्मण) पर्याप्त में १ (औदारिक काय योग) उपयोग ३ लेश्या ३ पहली।

७४—अभव्य अनन्त गुणा। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १ योग १३ (आहारक के दो वर्जे) उपयोग ६ लेश्या ६।

७५—प्रतिपतित (पडिवाई) सम्यगदृष्टि अनन्त गुणा। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६।

७६—सिद्ध अनन्तगुणा। इनमें जीव के भेद गुणस्थान योग और लेश्या नहीं उपयोग २ केवल ज्ञान केवल दर्शन।

७७—बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त अनन्त गुणा।

इनमें जीव का भेद १, गुणस्थान १ योग १ औदारिक उपयोग ३ लेश्या ३ पहली।

७८—वादर पर्याप्त विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद ६, गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६।

७६—वादर वनस्पति के अपर्याप्त असंख्यात गुणा। इनमें जीव का भेद १, गुणस्थान १ योग ३ (दो औदारिक के व कार्मण) उपयोग ३ लेश्या ४ पहली।

८०—वादर के अपर्याप्त विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद ६ गुणस्थान ३ पहले, योग ५ (दो औदारिक के दो वैक्रिय के व कार्मण) उपयोग ८ तथा ९ (८ पावे तो ३ ज्ञान, ३ अज्ञान तथा अचक्षुदर्शन और अवधि दर्शन) ९ पावे तो (३ ज्ञान, ३ अज्ञान और ३ दर्शन) लेश्या ६।

८१—समुच्चय वादर विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १२ गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६।

८२ से ८५—(८२) सूक्ष्म वनस्पति का अपर्याप्त असंख्यात गुणा (८३) सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक (८४) सूक्ष्म वनस्पति के पर्याप्त संख्यातगुणा (८५) सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक। इनमें प्रत्येक में जीव का भेद १ (अपना अपना) गुणस्थान १ योग अपर्याप्त में ३ (औदारिक के दो व कार्मण) पर्याप्त में एक (औदारिक काय योग) उपयोग ३ लेश्या ३ पहली।

८६—समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक। इनमें जीव के

द २ गुणस्थान १ योग ३ उपयोग ३ लेश्या ३ पहली।

८७—भव्य (भवसिद्धिया) जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६।

८८ से ८९–(८८) निगोद के जीव विशेषाधिक (८९) वनस्पति के जीव विशेषाधिक। इनमें प्रत्येक में जीव के भेद ४ (१,२,३,४,) गुणस्थान १ योग ३ उपयोग ३ लेश्या निगोद में ३ वनस्पति में ४ पहली।

९०—एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद ४ गुणस्थान १ योग ५ (औदारिक के दो वैक्रिय के दो व कार्मण), उपयोग ३ लेश्या ४ पहली।

९१—तिर्यंच जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान ५ योग १३ (आहारक के दो छोड़कर) उपयोग ९ लेश्या ६।

९२—मिथ्यात्वी जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १ योग १३ (आहारक के दो वर्जे) उपयोग ६ लेश्या ६।

९३—अव्रती जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान ४ योग १३ उपयोग ९ लेश्या ६।

९४—सकषायी जीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १० योग १५ उपयोग १० लेश्या ६।

९५—छद्मस्थजीव विशेषाधिक। इनमें जीव के भेद

१४ गुणस्थान १२ योग १५ उपयोग १० लेश्या ६ ।

९६—सयोगी जीव विशेषाधिक । इनमें जीव के भेद १४ गुणस्थान १३ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६ ।

९७-९८-(९७) संसारी जीव विशेषाधिक (९८) सन्नी जीव विशेषाधिक । इनमें प्रत्येक में जीव के भेद १४ गुणस्थान १४ योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६ ।

इन ९८ बोलों में एक बोल सबसे थोड़ा, चार अनन्त गुणा, ३५ असंख्यात गुणा, २८ संख्यात गुणा, और ३० विशेषाधिक के हैं ।

इन ९८ बोलों में वेद की अपेक्षा ९ स्त्री वेदवाले, २३ पुरुष वेद वाले, १६ सवेदी, १ अवेदी, ४९ नपुंसक वेद वाले हैं ।

इन ९८ बोलों में भव्य की अपेक्षा ३ बोल (४,७५,८७) एकान्त भव्य के, १ बोल (७४) अभव्य का, १ बोल (७६) नो भव्य नो अभव्य का, ९३ बोल भव्य अभव्य दोनों के हैं ।

इन ९८ बोलों में ३ बोल (२४,९५,९७) अशाश्वत हैं और शेष ९५ बोल शाश्वत हैं ।

११—स्थिति द्वार

(पन्नवणा सूत्र चौथा पद)

इस थोकड़े में अधोलोक, तिर्यक लोक और ऊर्ध्वलोक के जीवों की स्थिति का वर्णन है। पहले सामान्य रूप से जीवों की स्थिति बताकर बाद में उनके पर्याप्त अपर्याप्त भेद कर स्थिति का वर्णन किया गया है।

समुच्चय नैरयिकों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट ३३ सागरोपम की है। अपर्याप्त नैरयिकों की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है। पर्याप्त नैरयिकों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम की है।

रत्नप्रभा नारकी के नैरयिकों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम की है। अपर्याप्त रत्नप्रभा नारकी के नैरयिकों की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है। पर्याप्त रत्नप्रभा नारकी के नैरयिकों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम एक सागरोपम की है। शेष छह नारकी के नैरयिकों की स्थिति इस प्रकार है—

नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
२. शर्कराप्रभा	१ सागरोपम	३ सागरोपम

३. बालुका प्रभा	३ सागरोपम	७ ...
४. पंक प्रभा	७ सागरोपम	१० सागरो
५. धूम प्रभा	१० सागरोपम	१७ सागरोपम
६. तमः प्रभा	१७ सागरोपम	२२ सागरो
७. तमस्तमः प्रभा	२२ सागरोपम	३३ सागरो

इन छहों नारकी के अपर्याप्त नैरयिकों की स्थि
जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है और पर्याप्त नैरयिकों
स्थिति ऊपर बताई गई जघन्य उत्कृष्ट स्थिति से अ
मुहूर्त कम है। ये ८×३ -२४ अलावा हुए।

समुच्चय देवता की स्थिति नैरयिकों के समान ही
समुच्चय देवियों की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष
उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की। अपर्याप्त देवियों की स्थिति
जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की। पर्याप्त देवियों की स्थि
जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष की, उत्कृष्ट अ
मुहूर्त कम ५५ पल्योपम की। समुच्चय भवनपति देव
तथा असुर कुमार देवों की स्थिति जघन्य दस हजार व
की, उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक। इनकी देवि
की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट साढ़े च
पल्योपम की। नाग कुमार आदि शेष नव जाति के भ
पति देवता की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृ
कुछ कम दो पल्योपम की। इनकी देवियों की स्थि
जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ कम एक पल्योप

। इन सभी के अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्त र्त की है और पर्याप्त की स्थिति ऊपर जो जघन्य उत्कृष्ट ति बताई है उससे अन्तर्मुहूर्त कम है। समुच्चय देवता ुच्चय भवनपति, दस असुर कुमार ये बारह और इन रह की देवियाँ ये २४ इनमें प्रत्येक के ३-३ अलावा होने २४×३=७२ अलावा हुए।

समुच्चय पृथ्वीकाय और बादर पृथ्वीकाय की स्थिति घन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट २२ हजार वर्ष की। इनके पर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और र्याप्त की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम ावीस हजार वर्ष की। सूक्ष्म पृथ्वीकाय सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त और सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त की स्थिति जघन्य त्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की है। पृथ्वीकाय के ९ अलावा हुए।

समुच्चय अप्काय और बादर अप्काय की स्थिति जघन्य न्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की है। समुच्चय जस्काय और बादर तेजस्काय की स्थिति जघन्य अन्त- मुहूर्त उत्कृष्ट ३ अहोरात्रि की है। समुच्चय वायुकाय और ादर वायुकाय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट ीन हजार वर्ष की है। समुच्चय वनस्पति और बादर वन- पति की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दस हजार वर्ष ी है। इन सभी के अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट न्तर्मुहूर्त की है और इनके पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्त

मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की। इनके अपर्याप्त स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम की है।

समुच्चय उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय तथा गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तीनों स्थितियाँ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कह देनी चाहिए। सम्मूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट त्रेपन हजार वर्ष की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम त्रेपन हजार वर्ष की है।

समुच्चय भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय तथा गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तीनों स्थितियाँ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह ही है। सम्मूर्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बयालीस हजार वर्ष की है। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम बयालीस हजार वर्ष की है।

समुच्चय खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय तथा गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट

ल्योपम के असंख्यातवें भाग की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम पल्योपम के असंख्यातवें भाग की। सम्मूर्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बहत्तर हजार वर्ष की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम बहत्तर हजार वर्ष की। उक्त प्रकार से तिर्यंच पंचेन्द्रिय के ६×९=५४ अलावा हुए।

मनुष्य की तथा गर्भज मनुष्य की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम की। सम्मूर्छिम मनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की। सम्मूर्छिम मनुष्य अपर्याप्त ही होते हैं। मनुष्य के इस प्रकार ७ अलावा हुए।

व्यन्तर देवता की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम एक पल्योपम की। व्यन्तर देवी की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की। इनके अपर्याप्त

स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम एक पल्योपम की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम की। समुच्चय वैमानिक देवियों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट पचपन पल्योपम की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम एक पल्योपम की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम पचपन पल्योपम की। इनके २×३=६ अलावा हुए।

पहले देवलोक के देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की। इनके अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त कम एक पल्योपम की उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम दो सागरोपम की। पहले देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट पचास पल्योपम की। (पहले देवलोक की) परिग्रहीता देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की। अपरिग्रहीता देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट पचास पल्योपम की। देवियों के अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति अपनी अपनी स्थिति से अन्तर्मुहूर्त कम है। पहले देवलोक के ४×३=१२ अलावा हुए।

दूसरे देवलोक के देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम से अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम से अधिक। दूसरे देवलोक

के देवियों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम से अधिक उत्कृ-ष्ट पचपन पल्योपम की। परिग्रहीता देवियों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम से अधिक उत्कृष्ट नौ पल्योपम की। अपरिग्रहीता देवियों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम से अधिक उत्कृष्ट पचपन पल्योपम की। दूसरे देवलोक के देवता और देवियों के अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति अपनी अपनी स्थिति से अन्तर्मुहूर्त कम है। दूसरे देवलोक के ४×३=१२ अलावा हुए।

शेष वैमानिक देवों की स्थिति

नाम	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति
तीसरे देवलोक के देवता की	दो सागरो०	सात सागरो०
चौथे ,, ,,	दो सागरो० से अधिक	सात सागरो० से अधिक
पाँचवें ,, ,,	सात सागरोपम	दस सागरोपम
छठे ,, ,,	दस ,,	चौदह ,,
सातवें ,, ,,	चौदह ,,	सतरह ,,
आठवें ,, ,,	सतरह ,,	अठारह ,,
नवें ,, ,,	अठारह ,,	उन्नीस ,,
दसवें ,, ,,	उन्नीस ,,	बीस ,,
ग्यारहवें ,, ,,	बीस ,,	इक्कीस ,,
बारहवें ,, ,,	इक्कीस ,,	बाईस ,,

पहले ग्रैवेयक के देवता की	बाईस	,,	तेईस ,,
दूसरे ,, ,,	तेईस	,,	चौवीस ,,
तीसरे ,, ,,	चौवीस	,,	पच्चीस ,,
चौथे ,, ,,	पच्चीस	,,	छब्बीस ,,
पांचवें ,, ,,	छब्बीस	,,	सताईस ,,
छठे ,, ,,	सताईस	,,	अठाईस ,,
सातवें ,, ,,	अठाईस	,,	उनतीस ,,
आठवें ,, ,,	उनतीस	,,	तीस ,,
नवें ,, ,,	तीस	,,	इकतीस ,,

चार अनुत्तर विमान के देवता की स्थिति जघन्य इकतीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की। सर्वार्थ सिद्ध के देवता की स्थिति अजघन्य अनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की। तीसरे देवलोक से सर्वार्थसिद्ध तक के देवताओं के अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त की और पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति उपरोक्त अपनी-अपनी स्थिति से अन्तर्मुहूर्त कम है। तीसरे देवलोक से सर्वार्थसिद्ध तक २१×३ ६३ अलावा हुए।

इस प्रकार २४+७२+४५+९+५४+७+६+३६+६+१२+१२+६३=३४६ अलावा हुए।

१२—जीव पर्याय का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र पांचवां पद)

इस थोकड़े में जीव की पर्याय अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा एक स्थान पतित (एगट्ठाण वडिया) द्विस्थान पतित (दुट्ठाणवडिया) त्रिस्थान पतित (तिट्ठाण वडिया) और चतुःस्थान पतित (चउट्ठाणवडिया) बतलाई जायगी एवं पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श इन बीस बोल की अपेक्षा तथा बारह उपयोग की अपेक्षा षट् स्थान पतित (छट्ठाणवडिया) कही जायगी। थोकड़े के प्रारम्भ में इनका खुलासा कर देने से पाठकों को समझने में सरलता होगी।

एक स्थान पतित-एक स्थान पतित का आशय यह असंख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक है। जैसे एक युगलिए की स्थिति अन्तर्मुहूर्त कम तीन पल्योपम की है और दूसरे की तीन पल्योपम की है। अन्तर्मुहूर्त पल्योपम का असंख्यातवां भाग होता है। अतः पहले की स्थिति असंख्यात भाग हीन है और दूसरे की स्थिति असंख्यात भाग अधिक है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य की स्थिति एक स्थान पतित बतलाई जायगी।

द्विस्थान पतित—द्विस्थान पतित का आशय यहाँ असं

ख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन और असंख्यात भाग अधिक संख्यात भाग अधिक है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों की स्थिति द्विस्थान पतित आगे कहेंगे। जैसे एक नैरयिक की स्थिति अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरोपम की है और दूसरे की स्थिति पूरे तेतीस सागरोपम की है। अन्तर्मुहूर्त तेतीस सागरोपम का असंख्यातवां भाग है, अतः पहले नैरयिक की स्थिति असंख्यात भाग हीन और दूसरे की असंख्यात भाग अधिक है। इसी प्रकार एक नैरयिक की स्थिति पल्योपम कम तेतीस सागरोपम की है और दूसरे की पूरे तेतीस सागरोपम की है। चूंकि पल्योपम सागरोपम का संख्यातवां भाग है अतः पहले नैरयिक की स्थिति संख्यात भाग हीन और दूसरे की संख्यात भाग अधिक हुई।

त्रिस्थान पतित-त्रिस्थान पतित का आशय यहां असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक से है। आगे अवगाहना और स्थिति त्रिस्थान पतित कहेंगे। जैसे एक जीव की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग कम पांच सौ धनुष की है और दूसरे की पांच सौ धनुष की है। अंगुल का असंख्यातवां भाग पांच सौ धनुष का असंख्यातवां भाग है। इसलिए पहले जीव की अवगाहना असंख्यात भाग हीन है और दूसरे जीव की अवगाहना पहले की अपेक्षा असंख्यात भाग अधिक है। इसी

तरह एक जीव की अवगाहना एक कम पांच सौ धनुष की
है और दूसरे की अवगाहना पांच सौ धनुष की है। एक
धनुष पांच सौ धनुष का संख्यातवां भाग है अतः पहले जीव
की अवगाहना संख्यात भाग हीन है और दूसरे की पहले
की अपेक्षा संख्यात भाग अधिक है। इसी तरह एक जीव
की अवगाहना १२५ धनुष की है और दूसरे जीव की
अवगाहना पांच सौ धनुष की है। सवासौ को चार से गुण
करने पर पांच सौ होते हैं। अतः पहले की अवगाहना
संख्यात गुण हीन है और उसकी अपेक्षा दूसरे की अवगाहना
संख्यात गुण अधिक है।

स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित इस तरह समझना
चाहिए। जैसे एक पृथ्वी काय के जीव की स्थिति मुहूर्त
के असंख्यातवें भाग कम बावीस हजार वर्ष की है और दूसरे
की बावीस हजार वर्ष की है। यहां पहले जीव की स्थिति
असंख्यात भाग हीन है और उसकी अपेक्षा दूसरे की स्थिति
असंख्यात भाग अधिक है। इसी तरह एक पृथ्वीकाय के
जीव की स्थिति मुहूर्त कम बावीस हजार वर्ष की है
और दूसरे पृथ्वीकाय के जीव की बावीस हजार वर्ष की
है। एक मुहूर्त बावीस हजार वर्ष का संख्यातवां भाग है
अतः पहले जीव की स्थिति संख्यात भाग हीन और उसकी
अपेक्षा दूसरे जीव की स्थिति संख्यात भाग अधिक है। इस
प्रकार एक पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति एक हजार व

की है और दूसरे पृथ्वीकाय के जीव की स्थिति बावीस हजार वर्ष की है। एक हजार से बावीस हजार बावीस गुणा यानी संख्यात गुण अधिक है। अतः पहले जीव की स्थिति संख्यात गुण हीन है और दूसरे जीव की स्थिति संख्यातगुण अधिक है।

चतुःस्थान पतित—चतुःस्थान पतित का आशय यहां असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, असंख्यातगुण हीन, संख्यातगुण हीन तथा असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, असंख्यात गुण अधिक, संख्यात गुण अधिक से है। ऊपर जो त्रिस्थान पतित बताया है उससे चतुःस्थान पतित में असंख्यात गुण हीन और असंख्यात गुण अधिक बढा है। अतः यहां अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा असंख्यात गुण हीन और असंख्यात गुण अधिक का उदाहरण दिया जाता है। जैसे एक जीव की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग की है और दूसरे की अवगाहना एक अंगुल की है। अंगुल के असंख्यातवें भाग से अंगुल असंख्यात गुणा है। अतः पहले जीव की अवगाहना असंख्यात गुण हीन है और दूसरे जीव की अवगाहना असंख्यात गुण अधिक है। इसी तरह स्थिति भी असंख्यातगुण हीन और असंख्यातगुण अधिक समझनी चाहिए। जैसे एक जीव की स्थिति एक हजार वर्ष की है और दूसरे की तीन पल्योपम की है चूंकि असंख्यात वर्षों का एक पल्योपम होता है इसलिए एक हजार वर्ष से पल्योपम

असंख्यात गुण अधिक है अतः पहले जीव की स्थिति असंख
गुण हीन है और दूसरे की स्थिति असंख्यात गुण अ
है। जिन जीवों की स्थिति असंख्यात वर्षों की हो
उनकी स्थिति चतुःस्थान पतित समझनी चाहिए ।

षट्स्थान पतित-आगे वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के
बोलों के पर्याय की तथा बारह उपयोग के पर्याय की अपेक्षा
स्थान पतित कहेंगे। षट्स्थान पतित का आशय अनन्त
हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुण
असंख्यात गुण हीन, अनन्तगुण हीन और अनन्त भाग अ
असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात
अधिक, असंख्यात गुण अधिक अनन्तगुण अधिक से
काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को असद्भूत स्थापना से
हजार माना जाय और सर्व जीवों की अनन्त संख्या क
मानकर उसमें भाग दिया जाय तो भागफल सौ आवे
एक जीव के काले वर्ण की पर्याय दस हजार है और
जीव के काले वर्ण की पर्याय सौ कम यानी ९९००
चूंकि सर्व जीवों की अनन्त संख्या से भाग देने से भा
सौ आया है अतः यह सौ अनन्तवां भाग है अतः ९
काले वर्ण की पर्याय वाला दस हजार काले वर्ण की
वाले की अपेक्षा अनन्त भाग हीन है और दस हजार
वर्ण की पर्याय वाला अनन्त भाग अधिक है। इसी
काले वर्ण की पर्यायों को दस हजार माने और लोक

प्रदेश प्रमाण असंख्यात संख्या को पचास मानलें। दसहजार में पचास का भाग देने पर भागफल २०० प्राप्त हुआ। यह दो सौ असंख्यातवाँ भाग है। एक जीव की काले वर्ण की पर्याय २०० कम ९८०० है और दूसरे जीव की दश हजार पर्याय है। पहले जीव की पर्याय दूसरे जीव की अपेक्षा असंख्यात भाग हीन है और दूसरे की पहले की अपेक्षा असंख्यात भाग अधिक है।

काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को ऊपर लिखे अनुसार दस हजार मानलें और उत्कृष्ट संख्यात संख्या को दस मान लें। दस हजार में दस का भाग देने पर भागफल १००० प्राप्त हुआ। यह एक हजार संख्यातवाँ भाग है। एक जीव की काले वर्ण की पर्याय हजार कम ९००० है और दूसरे की दस हजार है। अतः पहले जीव की काले वर्ण की पर्याय दूसरे की अपेक्षा संख्यात भाग हीन है और दूसरे की संख्यात भाग अधिक है।

ऊपर काले वर्ण की अनन्त पर्यायों को दस हजार माना है और उसमें सर्वजीव की अनन्त संख्या को सौ मान कर, लोकाकाश प्रदेश प्रमाण असंख्यात संख्या को पचास मान कर, उत्कृष्ट संख्यात को दस मान कर भाग दिया है और भागफल क्रमशः सौ, दो सौ और हजार आया है और सौ को अनन्तवां भाग, दो सौ को असंख्यातवां भाग और हजार को संख्यातवां भाग माना है। कल्पना करो एक जीव की काले वर्ण की पर्याय एक हजार है दूसरे की दस

हजार है। हजार को दस से गुणा करने पर दस हजार आता है इसलिए हजार पर्याय वाला संख्यातगुण हीन और दस हजार पर्याय वाला संख्यातगुण अधिक है। इसी तरह एक जीव की काले वर्ण की पर्याय दो सौ है और दूसरे की दस हजार है। दो सौ को पचास से गुणा करने पर दस हजार होते हैं अतः पहले जीव की पर्याय दूसरे की अपेक्षा असंख्यातगुण हीन है और दूसरे की असंख्यातगुण अधिक है। इसी प्रकार एक जीव की काले वर्ण की पर्याय सौ है और दूसरे की दश हजार है। सर्व जीवों की अनन्त संख्या को सौ माना है। सौ को सौ से गुणा करने पर दश हजार होते हैं। अतः सौ पर्याय वाला दश हजार पर्याय वाले की अपेक्षा अनन्त गुण हीन है और दश हजार पर्याय वाला अनन्तगुण अधिक है।

पर्याय दो तरह की हैं—जीव पर्याय और अजीव पर्याय। जीव पर्याय संख्यात असंख्यात न हो कर अनन्त हैं क्योंकि तेईस दंडक के जीव असंख्यात हैं, वनस्पति के जीव अनन्त हैं और सिद्ध भगवान अनन्त हैं।

नारकी के नैरयिकों की पर्याय संख्यात और असंख्यात न हो कर अनन्त हैं। नारकी का एक नैरयिक दूसरे नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है अवगाहना की अपेक्षा चतुः स्थान पतित (चउट्ठाणवडिया) है, स्थिति की अपेक्षा चतुः स्थान पतित है, वर्ण गंध रस

और स्पर्श के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा एवं नौ उपयोग (३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट् स्थान पतित (छट्ठाणवडिया) है। नारकी की तरह देवता के तेरह दण्डक और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का १ दण्डक-ये चौदह दण्डक कहना चाहिए किन्तु ज्योतिषी और वैमानिक देवों में स्थिति त्रिस्थान पतित (तिट्ठाण वडिया) कहनी चाहिए।

पृथ्वीकाय की पर्याय अनन्त हैं। एक पृथ्वीकाय दूसरे पृथ्वीकाय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा तीन उपयोग (दो अज्ञान, एक दर्शन) की अपेक्षा षट् स्थान पतित है। पृथ्वीकाय की तरह शेष चार स्थावर कहना चाहिए।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय इन तीन विकलेन्द्रिय की पर्याय भी अनन्त हैं। द्वीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय से, त्रीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय से, चतुरिन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट् स्थान पतित है। द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पांच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा और चतुरिन्द्रिय छह उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट् स्थान पतित है।

मनुष्य की पर्याय अनन्त हैं।
की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपे
की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, रि
पतित है, वर्णादि के बीस बोल
दश उपयोग की पर्यायों की अपेक्ष
केवल ज्ञान केवल दर्शन की पर्या

जघन्य अवगाहना वाले नैर
हैं। जघन्य अवगाहना वाला नैर
वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा
तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तु
चतुःस्थान पतित है तथा वर्णादि
उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा
ष्ट अवगाहना वाले नैरयिकों की
उत्कृष्ट अवगाहना वाला नैरयिक
नैरयिक से द्रव्य प्रदेश तथा अव
स्थिति की अपेक्षा द्विस्थान पति
वर्णादि के बीस बोल तथा ६ उप
षट्स्थान पतित है। मध्यम (अ
हना वाले नैरयिकों की भी अ
अवगाहना वाला नैरयिक मध्यम

के वीस वोल और ९ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं ।

जघन्य स्थिति वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य स्थिति वाला नैरयिक जघन्य स्थिति वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के वीस वोल तथा ९ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं। उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना किन्तु स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना।

जघन्य गुण काले वर्ण वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य गुण काले वर्ण वाला नैरयिक जघन्य गुण काले वर्ण वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, जघन्य गुण काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष १९ वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा ९ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाले नैरयिक भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें वर्णादि वीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। जिस

तरह काले वर्ण वाले नैरयिकों बावत कहा उसी तरह शेष १९ वर्णादि के नैरयिकों का भी कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य मतिज्ञान वाला नैरयिक जघन्य मतिज्ञान वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि बीस बोल की पर्यायों तथा पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। मतिज्ञान की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है। उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले भी इसी तरह कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले भी इसी तरह कहना परन्तु इनमें छह उपयोग की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मतिज्ञान की तरह श्रुत-ज्ञान, अवधिज्ञान और तीन अज्ञान भी कहना। जिनके ज्ञान हैं उनके अज्ञान नहीं होते और जिनके अज्ञान हैं उनके ज्ञान नहीं होते।

जघन्य चक्षुदर्शन वाले नैरयिकों की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य चक्षुदर्शन वाला नैरयिक जघन्य चक्षुदर्शन वाले नैरयिक से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा ८ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, चक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी

वर्णादि के बोल कहना चाहिए।

जघन्य मति अज्ञान वाला पृथ्वीकाय का जीव जघन्य मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है और स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वर्णादि २० बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, मति अज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुत अज्ञान और अचक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव के लिए भी इसी तरह कहना। मध्यम मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव के लिए भी इसी तरह कहना चाहिए। फर्क यह है कि इसमें तीनों उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मति अज्ञान वाले पृथ्वीकाय के जीव की तरह ही श्रुत अज्ञान और अचक्षुदर्शन वाले पृथ्वीकाय के जीवों के भी जघन्य उत्कृष्ट और मध्यम भेद से वर्णन करना।

पृथ्वीकाय के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि २० बोल और ३ उपयोग ये २५ बोल के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम की अपेक्षा २५×३=७५ अलावा हुए। पृथ्वीकाय की तरह ही शेष चार स्थावर भी कहना चाहिए। इस तरह पाँच स्थावर के ५×७५=३७५ अलावा हुए।

द्वीन्द्रिय की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य अवगाहना

ाला द्वीन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा पाँच उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान और अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, इतना फर्क है कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले में ३ उपयोग कहना। मध्यम अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर केवल इतना है कि इनमें अवगाहना चतुःस्थान पतित कहनी चाहिए।

जघन्य स्थिति वाला द्वीन्द्रिय जघन्य स्थिति वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुः स्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि २० बोल की पर्यायों तथा तीन उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाले द्वीन्द्रिय भी कहना, अन्तर इतना है कि इनमें ५ उपयोग कहना। मध्यम स्थिति वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य स्थिति वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित कहना तथा इनमें ५ उपयोग कहना।

जघन्य गुण काले वर्ण वाला द्वीन्द्रिय जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष १९ वर्णादि की पर्यायों तथा ५ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर यह है कि इनमें वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाला द्वीन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वर्णादि बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, श्रुत ज्ञान और अचक्षु दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी जघन्य मतिज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना, अन्तर इतना है कि तीनों उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मतिज्ञान वाले

ेन्द्रिय की तरह श्रुतज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना। मति-
ान वाले श्रुतज्ञान वाले द्वीन्द्रिय की तरह मति अज्ञान वाले
ुत अज्ञान वाले द्वीन्द्रिय भी कहना, सिर्फ ज्ञान की जगह
ज्ञान कहना। अचक्षुदर्शन वाले द्वीन्द्रिय भी मतिज्ञान
ाले द्वीन्द्रिय की तरह कहना। अन्तर इतना है कि जघन्य
और उत्कृष्ट अचक्षुदर्शन वाले द्वीन्द्रिय अचक्षुदर्शन की
र्यायों की अपेक्षा तुल्य हैं और दो ज्ञान दो अज्ञान इन चार
पयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं तथा मध्यम
ाचक्षुदर्शन वाले पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान
तित हैं। द्वीन्द्रिय के अवगाहना, स्थिति, वर्णादि २०
था उपयोग ५ कुल २७ बोल के जघन्य, उत्कृष्ट, मध्यम
ी अपेक्षा २७×३=८१ अलावा हुए। द्वीन्द्रिय की तरह
ीन्द्रिय भी कहना। इनके भी ८१ अलावा कहना। चतुरिन्द्रिय
ं चक्षुदर्शन अधिक है इसलिए २८ बोल हुए। जघन्य
ुत्कृष्ट और मध्यम के भेद से २८×३=८४ अलावा हुए।
िकलेन्द्रिय के कुल ८१+८१+८४=२४६ अलावा हुए।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अनन्त पर्याय हैं। जघन्य अव-
ाहना वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले
तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की
अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की
अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वर्णादि २० बोल की पर्यायों
की अपेक्षा और छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो

तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, कालेवर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि उन्नीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा ६ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना। इसी तरह मध्यम गुण काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कहना, अन्तर इतना है कि इनमें बीस वर्णादि की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। काले वर्ण वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह शेष १९ वर्णादि वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि २० बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना, अन्तर इतना है कि उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित कहना तथा उत्कृष्ट मतिज्ञान की पर्यायों

की अपेक्षा तुल्य और शेष ५ उपयोग (श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मध्यम मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी जघन्य मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह कहना, इतना अन्तर है कि इनमें छह उपयोग की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मतिज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह ही श्रुत ज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना। मतिज्ञान की जगह श्रुतज्ञान कहना।

जघन्य अवधि ज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघ अवधि ज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से द्रव्य की अपे तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपे चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित अवधि ज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। जघन्य अव ज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तरह उत्कृष्ट अवधि ज्ञा वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय कहना। मध्यम अवधि ज्ञान व भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि इनमें छह उप की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मतिज्ञ श्रुतज्ञानी की तरह, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी कह अवधिज्ञानी की तरह विभंग ज्ञानी कहना।

जघन्य चक्षुदर्शन वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय ज

पंचेन्द्रिय भी कहना। मध्यम अवधि दर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी इसी तरह कहना, इतना अन्तर है कि मध्यम अवधि दर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में नौ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। इस तरह अवगाहना स्थिति वर्णादि के बीस बोल और ६ उपयोग इन ३१ बोल के जघन्य उत्कृष्ट और मध्यम के भेद से ३१×३=६३ अलावा हुए।

मनुष्य की अनन्त पर्याय कही गई हैं। जघन्य अवगाहना वाला मनुष्य जघन्य अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा आठ उपयोग (३ ज्ञान २ अज्ञान और ३ दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा एक स्थान पतित कहना तथा ६ उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) कहना। मध्यम अवगाहना वाला मनुष्य मध्यम अवगाहना वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, केवल ज्ञान केवल दर्शन की

पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

जघन्य स्थिति वाला मनुष्य जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर यह है कि छह उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मध्यम स्थिति वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना तथा दश उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना और केवल ज्ञान केवल दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य कहना।

जघन्य गुण काले वर्ण वाला मनुष्य जघन्य गुण काले वर्ण वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, शेष १९ वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा दस उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, केवल ज्ञान केवल दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा

उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला मनुष्य भी कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है कि बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। काले वर्ण की तरह शेष १९ वर्णादि कहना।

जघन्य मतिज्ञान वाला मनुष्य जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है। बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, मतिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, तीन उपयोग (श्रुतज्ञान और दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। जघन्य मतिज्ञान वाले मनुष्य की तरह उत्कृष्ट मतिज्ञान वाला मनुष्य कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित कहना, तीन ज्ञान और तीन दर्शन इन छह उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मध्यम अवधि ज्ञान वाला मनुष्य भी उत्कृष्ट मतिज्ञान वाले मनुष्य की तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना, सात उपयोग (चार ज्ञान तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मतिज्ञान की तरह श्रुतज्ञान कह देना।

जघन्य अवधिज्ञान वाला मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञान वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा

तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, ६ उपयोग (तीन ज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। अवधिज्ञान की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। उत्कृष्ट अवधिज्ञान वाला मनुष्य भी जघन्य अवधि ज्ञान वाले मनुष्य की तरह कहना। मध्यम अवधि ज्ञान वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर यह है कि अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना और ७ उपयोग (४ ज्ञान ३ दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। अवधिज्ञान की तरह मनःपर्यय ज्ञान भी कहना, अन्तर इतना है कि मध्यम मनःपर्यय ज्ञान वाले मनुष्य में अवगाहना त्रिस्थान पतित कहना।

केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य की अपेक्षा द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, बीस वर्णादि पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, केवल ज्ञान केवल दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। मतिज्ञान की तरह मति अज्ञान श्रुत अज्ञान कहना। अवधि ज्ञान की तरह विभंग ज्ञान कहना।

जघन्य चक्षुदर्शन वाला मनुष्य जघन्य चक्षुदर्शन वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की

अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा पांच उपयोग (दो ज्ञान, दो अज्ञान, अचक्षु दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। चक्षु दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तरह उत्कृ चक्षुदर्शन वाला मनुष्य कह देना, अन्तर इतना है कि स्थि की अपेक्षा त्रिस्थान पतित कहना और ६ उपयोग (चार ज्ञा तीन अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थ पतित कहना और चक्षुदर्शन की अपेक्षा तुल्य कहना। मध्यम चक्षुदर्शन वाला मनुष्य भी उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाले मनुष्य की तरह कहना, अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित और दस उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। चक्षुदर्शन की तरह ही अचक्षुदर्शन कहना।

जघन्य अवधि दर्शन वाला मनुष्य जघन्य अवधि दर्श वाले मनुष्य से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्ष तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, स्थि की अपेक्षा त्रिस्थान पतित है, वीस वर्णादि की पर्यायों क अपेक्षा तथा ६ उपयोग (चार ज्ञान, तीन अज्ञान, द दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है त अवधि दर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तर उत्कृष्ट अवधि दर्शन वाला मनुष्य कहना। मध्यम अवधि दर्शन वाला मनुष्य भी इसी तरह कहना, अन्तर इतना है

कि इसमें स्थिति चतुःस्थान पतित कहना और दस उपयोग (४ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। केवल दर्शन केवल ज्ञान की तरह कहना। इस प्रकार मनुष्य के अवगाहना, स्थिति, बीस वर्णादि और दस उपयोग इन ३२ बोल के जघन्य उत्कृष्ट और मध्यम के भेद से ३२×३=९६ तथा केवल ज्ञान केवल दर्शन के दो कुल ९८ अलावा हुए।

व्यंतर असुरकुमार की तरह कहना चाहिए। ज्योतिषी और वैमानिक असुरकुमार की तरह कहना चाहिए, अन्तर यह है कि इनमें स्थिति त्रिस्थान पतित कहनी चाहिए। नैरयिक की तरह व्यंतर के ९३ ज्योतिषी के ९३ और वैमानिक के ९३ अलावा होते हैं।

समुच्चय के २४, नरक के ९३, देवता के तेरह दण्डक के ९३×१३=१२०९, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के ९३, पांच स्थावर के ३७५, विकलेन्द्रिय के २४६ और मनुष्य के ९८ कुल २४ +९३+१२०९+९३+३७५+२४६+९८=२१३८ अलावा हुए।

की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है । एक समय की स्थिति वाले पुद्गल की तरह दो समय की स्थिति वाले यावत् दश समय की स्थिति वाले पुद्गल भी कह देने चाहिए। संख्यात समय की स्थिति वाला पुद्गल संख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है । असंख्यात समय की स्थिति वाला पुद्गल असंख्यात समय की स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है ।

एक गुण काले वर्ण का पुद्गल एक गुण काले वर्ण के पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि के १९ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। एक गुण काले वर्ण के पुद्गल की तरह दो गुण काले वर्ण वाला पुद्गल यावत् दश गुण काले वर्ण वाला पुद्गल कह देना चाहिए । संख्यात गुण काले वर्ण वाला पुद्गल संख्यात गुण काले

वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है; स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, शेष वर्णादि के १९ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह असंख्यातगुण काले वर्ण वाले पुद्गल कहना अन्तर इतना है कि काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित कहना। इसी तरह अनन्त गुण काले वर्ण वाले पुद्गल भी कह देना। अन्तर इतना है कि इसमें वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। काले वर्ण की तरह ही शेष १९ वर्णादि के बोल भी कहना।

जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशी स्कंध जघन्य अव-गाहना वाले द्विप्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अव-गाहना वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कह देना चाहिए। द्विप्रदेशी स्कंध की मध्यम अवगाहना नहीं होती क्योंकि द्विप्रदेशी स्कंध की जघन्य अवगाहना एक आकाश प्रदेश की और उत्कृष्ट अवगाहना दो आकाश प्रदेश की होती है। इस की बीच की कोई अवगाहना नहीं है। इसी तरह जघन्य अवगाहना वाला त्रिप्रदेशी स्कंध, उत्कृष्ट अवगाहना

है इसी तरह उत्कृष्ट अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध भी कह देना किन्तु इतना अन्तर है कि स्थिति की अपेक्षा तुल्य है। मध्यम अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध मध्यम अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, तथा वर्णादि के २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

जघन्य स्थिति वाला परमाणु पुद्गल जघन्य स्थिति वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाले परमाणु पुद्गल कहना। मध्यम स्थिति वाले परमाणु पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना। जघन्य स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले द्विप्रदेशी स्कंध से द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है। जब हीन होता है तब एक प्रदेश हीन होता है और अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक होता है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के १६ बोल की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

उत्कृष्ट स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना पर इसमें स्थिति चतुःस्थान पतित कहना। इसी तरह त्रिप्रदेशी यावत् दश प्रदेशी स्कंध के जघन्य मध्यम उत्कृष्ट तीन-तीन अलावे कह देने चाहिए। अन्तर इतना है कि अवगाहना में क्रमशः एक-एक प्रदेश बढाना चाहिए यावत् दश प्रदेशी में नौ प्रदेश अधिक नौ प्रदेश हीन कहना चाहिए। जघन्य स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले संख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के सोलह बोल की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध भी कहना। मध्यम स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए पर इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित कहना चाहिए। जघन्य स्थिति वाला असं-ख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले असंख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है और वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला

है इसी तरह उत्कृष्ट अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध भी कह देना किन्तु इतना अन्तर है कि स्थिति की अपेक्षा तुल्य है। मध्यम अवगाहना वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध मध्यम अवगाहना वाले अनन्त प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना और स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, तथा वर्णादि के २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

जघन्य स्थिति वाला परमाणु पुद्गल जघन्य स्थिति वाले परमाणु पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाले परमाणु पुद्गल कहना। मध्यम स्थिति वाले परमाणु पुद्गल भी इसी तरह कहना, किन्तु अन्तर इतना है कि स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना। जघन्य स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले द्विप्रदेशी स्कंध से द्रव्य और प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है। जब हीन होता है तब एक प्रदेश हीन होता है और अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक होता है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के १६ बोल की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

उत्कृष्ट स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना पर इसमें स्थिति चतुःस्थान पतित कहना। इसी तरह त्रिप्रदेशी यावत् दश प्रदेशी स्कंध के जघन्य मध्यम उत्कृष्ट तीन-तीन अलावे कह देने चाहिए। अन्तर इतना है कि अवगाहना में क्रमशः एक-एक प्रदेश बढाना चाहिए यावत् दश प्रदेशी में नौ प्रदेश अधिक नौ प्रदेश हीन कहना चाहिए। जघन्य स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले संख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के सोलह बोल की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध भी कहना। मध्यम स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए पर इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित कहना चाहिए। जघन्य स्थिति वाला असं-ख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले असंख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है और वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला

असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए। जघन्य स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध जघन्य स्थिति वाले अनन्त प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम स्थिति वाला अनन्त प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए पर इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं, क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला पुद्गल जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, दो गंध, पाँच रस और दो स्पर्श इन नौ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण का परमाणु पुद्गल भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण का पुद्गल भी जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की तरह कहना किन्तु इसमें काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा भी षट्स्थान पतित

कहना चाहिए। जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्विप्रदेशी स्कंध की भी अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला द्विप्रदेशी स्कंध जघन्य गुण काले वर्ण वाले द्विप्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन कथंचित् तुल्य और कथंचित् अधिक है—जब हीन होता है तो एक प्रदेश से हीन होता है और अधिक होता है तो एक प्रदेश से अधिक होता है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है और शेष वर्णादि १५ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित हैं। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला द्विप्रदेशी स्कंध भी कहना। मध्यम गुण काला वर्ण वाले द्विप्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए पर इसमें वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। इस तरह जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण काले वर्ण वाले त्रिप्रदेशी यावत् दश प्रदेशी स्कंध तक कहना चाहिए। इसमें अवगाहना में प्रदेश वृद्धि ऊपर बताए अनुसार कहनी चाहिए यावत् दश प्रदेशी स्कंध में नौ प्रदेश हीन तथा नौ प्रदेश अधिक कहना चाहिए। जघन्य गुण काले वर्ण वाले संख्यात प्रदेशी स्कंध की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य गुण काले वर्ण वाले संख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की

अपेक्षा द्विस्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, शेष वर्णादि १५ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला संख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना चाहिए किन्तु इसमें वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। जघन्य गुण काले वर्ण वाले असंख्यात प्रदेशी स्कंध की भी अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कंध जघन्य गुण काले वर्ण वाले असंख्यात प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा चतुः-स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्याय की अपेक्षा तुल्य है शेष वर्णादि १५ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना। मध्यम गुण काले वर्ण वाला असंख्यात प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना, फर्क इतना है कि इसमें वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। जघन्य गुण काले वर्ण वाले अनन्त प्रदेशी स्कंध की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला अनन्त

आदि रस वाले परमाणु पुद्गल में अपने रस के सिवा अन्य रस नहीं कहना चाहिए। चार स्पर्श में से परमाणु पुद्गल में दो स्पर्श कहना।

जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कंधों की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कंध जघन्य गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है एवं कर्कश स्पर्श की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कंध भी कहना। मध्यम गुण कर्कश अनन्त प्रदेशी स्कंध भी इसी तरह कहना किन्तु इसमें वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना। मृदु, गुरु, लघु स्पर्श वाले अनन्त प्रदेशी स्कंध भी जघन्य उत्कृष्ट मध्यम के भेद से इसी तरह कह देना।

जघन्य प्रदेशी स्कंध (द्विप्रदेशी स्कंध) की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य प्रदेशी स्कंध जघन्य प्रदेशी स्कंध से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अव-गाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कथंचित तुल्य और कथंचित् अधिक है जब हीन होता है तो एक प्रदेश हीन होता है और जब अधिक होता है तो एक प्रदेश अधिक

होता है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट प्रदेशी स्कंध भी कहना किन्तु इसमें अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित तथा वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। मध्यम प्रदेशी स्कंध भी उत्कृष्ट प्रदेशी स्कंध की तरह कह देना चाहिए किन्तु इसमें प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए।

जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि १६ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। उत्कृष्ट अवगाहना वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा तुल्य कहना। मध्यम अवगाहना वाला पुद्गल मध्यम अवगाहना वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, वर्णादि के २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है।

जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि

जघन्य स्थिति वाला पुद्गल जघन्य स्थिति वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति वाला पुद्गल भी कहना। मध्यम स्थिति वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना किन्तु इसमें स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित कहना चाहिए।

जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल की अनन्त पर्याय हैं क्योंकि जघन्य गुण काले वर्ण वाला पुद्गल जघन्य गुण काले वर्ण वाले पुद्गल से द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है, काले वर्ण की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है, वर्णादि के १९ बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित है। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण वाला पुद्गल कहना। मध्यम गुण काला वर्ण वाला पुद्गल भी इसी तरह कहना किन्तु इसमें वर्णादि २० बोल की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थान पतित कहना चाहिए। जिस तरह काले वर्ण का कहा उसी तरह शेष वर्णादि १९ बोल कहना।

द्रव्य के १३, क्षेत्र के १२, काल के १२, भाव के २६०, अवगाहना के ३५, स्थिति के ३९, भाव के ६३६,

द्रव्य के ३, क्षेत्र के ३, काल के ३, भाव के ६०, कुल १०७६ अलावा हुए ।

१४—विरह द्वार का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र का छठा पद)

रक तिर्यंच मनुष्य और देव इन चारों गतियों में होने का विरह जघन्य एक समय का, उत्कृष्ट बारह का है । पहली नरक भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी और पहले दूसरे देवलोक तथा सम्मूर्छिम मनुष्य के उत्पन्न होने का विरह जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का है । दूसरी नरक से सातवीं नरक तक उत्पन्न होने का विरह जघन्य एक समय का है उत्कृष्ट विरह दूसरी नरक में सात दिन का, तीसरी नरक में १५ दिन का, चौथी नरक में एक महीने का, पांचवीं नरक में दो महीने का, छठी नरक में चार महीने का और सातवीं नरक में छह महीने का है । तीसरे देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न होने का विरह जघन्य एक समय का है और उत्कृष्ट विरह तीसरे देवलोक का ६ दिन और २० मुहूर्त का, चौथे देवलोक का

१२ दिन १० मुहूर्त का, पाँचवें देवलोक का साढे बावीस दिन का, छठे देवलोक का ४५ दिन का, सातवें देवलोक का ८० दिन का, आठवें देवलोक का १०० दिन का, नवें दशवें देवलोक का संख्यात महीनों का (बारह महीने के अन्दर का) ग्यारहवें, बारहवें देवलोक का संख्यात वर्षों का (१०० वर्षों के अन्दर का) नवग्रैवेयक की नीचे की त्रिक का संख्यात सैकड़ों वर्षों का, मध्यम त्रिक का संख्यात हजार वर्षों का, ऊपर की त्रिक का संख्यात लाख वर्षों का विजय आदि चार अनुत्तर विमान का पल्योपम के असंख्यातवें भाग का और सर्वार्थ सिद्ध का पल्योपम के संख्यातवें भाग का है। सिद्ध भगवान् और चौसठ इन्द्रों का विरह जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छह महीने का है।

चंद्र सूर्य का ग्रहण की अपेक्षा विरह पड़े तो जघन्य छह महीने का उत्कृष्ट चन्द्र का ४२ महीनों का और सूर्य का ४८ वर्ष का। चंद्र सूर्य दोनों का संयुक्त रूप से ग्रहण की अपेक्षा विरह पड़े तो जघन्य १५ दिन का उत्कृष्ट छह महीने का। पाँच स्थावर का उत्पन्न होने का विरह नहीं पड़ता। तीन विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यंच में विरह पड़े तो जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त का। संज्ञी तिर्यंच और संज्ञी मनुष्य में विरह पड़े तो जघन्य एक समय का उत्कृष्ट १२ मुहूर्त का। सम्यग्दृष्टि का विरह सात दिन का, श्रावक का विरह १२ दिन का और साधु का

विरह १५ दिन का पड़ता है।

* चार गति, सात नारकी, दस भवनपति, पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय, सम्मूर्छिम मनुष्य, गर्भज मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषी, बारह देवलोक, नवग्रैवेयक की त्रिक तीन, चार अनुत्तर विमान का एक, सर्वार्थसिद्ध तथा सिद्ध ये कुल ५३ बोल पन्नवणा सूत्र में विरह द्वार में कहे हैं। चौसठ इन्द्र, सूर्य चन्द्र के ग्रहण के दो, समदृष्टि, श्रावक और साधु इन छह बोलों का विरह इस थोकड़े में बताया है वह पन्नवणा सूत्र में नहीं है। अन्य जगह का है।

जिस तरह उत्पन्न होने का विरह कहा उसी तरह उद्वर्तन (निकलने) का विरह भी जानना चाहिए। ज्योतिषी और वैमानिक में उद्वर्तन न कह कर च्यवन कहना चाहिए। सूर्य चन्द्र के ग्रहण के दो, सिद्ध, समदृष्टि श्रावक और साधु के चार कुल छह बोल उद्वर्तन में नहीं कहने चाहिए अतः उद्वर्तन के ५३ बोल होते हैं।

---

० तीन चारित्र (परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात), तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव का विरह पड़े तो जघन्य चौरासी हजार वर्ष से अधिक, उत्कृष्ट देशोन (कुछ कम) अठारह कोटि-कोटि (क्रोड़ाक्रोड़ी) सागरोपम का। दो चारित्र (सामायिक और छेदोपस्थापनीय), चार तीर्थ, पाँच महाव्रत का विरह जघन्य त्रेसठ हजार वर्ष से अधिक उत्कृष्ट देशोन अठारह कोटि कोटि सागरोपम का। यह विरह-काल भरत ऐरवत क्षेत्रों की अपेक्षा जानना।

१५—सान्तर और निरन्तर का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र छठा पद)

नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति, देव गति, सात नारकी, दस भवनपति, तीन विकलेन्द्रिय, असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंज्ञी मनुष्य, संज्ञी मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषी, बारह देवलोक, नव ग्रैवेयक की तीन त्रिक, पाँच अनुत्तर विमान और सिद्ध इन ५१ बोलों में जीव निरन्तर भी उपजते हैं और सान्तर भी उपजते हैं। पाँच स्थावर में जीव निरन्तर उपजते रहते हैं। ये ५६ बोल हुए।

उपजने की तरह उद्वर्तन (निकलने) का भी कह देना चाहिए अन्तर इतना है कि पाँच स्थावर निरन्तर निकलते रहते हैं। सिद्धों का उद्वर्तन नहीं कहना। शेष जीव निरन्तर और सान्तर निकलते रहते हैं। ज्योतिषी वैमानिक में उद्वर्तन न कह कर च्यवन कहना। इस तरह ५५ बोल उद्वर्तन में कहने चाहिए।

१९—उत्पत्ति, उद्वर्तन और च्यवन का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र छठा पद)

नरक गति में एक समय में जघन्य १-२-३ उत्कृष्ट संख्यात यावत् असंख्यात उत्पन्न होते हैं। नरक गति की तरह सात नरक, दस भवनपति, तीन विकलेन्द्रिय, सम्मूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय, सम्मूर्छिम यानी असंज्ञी मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषी और आठ देवलोक ये ३३ बोल भी एक समय में जघन्य १-२-३ उत्कृष्ट संख्यात यावत् असंख्यात उत्पन्न होते हैं। चार स्थावर प्रत्येक समय निरन्तर असंख्यात उत्पन्न होते हैं। वनस्पति स्व-स्थान की अपेक्षा यानी वनस्पति मर कर वनस्पति में प्रत्येक समय में निरन्तर अनन्त उत्पन्न होते हैं। परस्थान की अपेक्षा पृथ्वी आदि के जीव मर कर वनस्पति में उत्पन्न होते हैं तो प्रत्येक समय निरन्तर असंख्यात उत्पन्न होते हैं। गर्भज मनुष्य, नवें से बारहवें देवलोक, नवग्रैवेयक की तीन त्रिक, पांच अनुत्तर विमान इन तेरह बोल में एक समय में जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात उत्पन्न होते हैं। सिद्ध भगवान् एक समय में एक दो तीन यावत् १०८ उत्पन्न होते हैं। ये ५३ (१+३३+४+१+१३+१=५३) बोल हुए।

जिस तरह उत्पन्न होने के ५३ बोल कहे उसी तरह

सिद्ध भगवान् के सिवा ५२ बोल उद्वर्तन के भी कहना। ज्योतिषी और वैमानिक देवों में उद्वर्तन की जगह च्यवन कहना चाहिए। सिद्ध भगवान् सिद्ध गति से निकलते नहीं अतः उनका चयवन नहीं कहना।

१७—गति आगति का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र छठा पद)

पहली नारकी में ११ की आगति-पाँच-संज्ञी तिर्यंच, पाँच असंज्ञी तिर्यंच और संख्यात वर्षों की आयु का कर्म-भूमि मनुष्य। इन ग्यारह स्थानों से आकर जीव पहली नारकी में उत्पन्न होते हैं। पहली नारकी की ६ की गति-पाँच संज्ञी तिर्यंच और संख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य यानी पहली नरक से निकलकर जीव इन छः स्थानों में उत्पन्न होते हैं।

दूसरी नारकी की आगति ६ की-पाँच संज्ञी तिर्यंच और संख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य। तीसरी नारकी की आगति ५ की-भुजपरिसर्प के सिवा चार संज्ञी तिर्यंच और संख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य।

चौथी नारकी की आगति ४ की उपरोक्त ५ में खेचर टालना। पांचवीं नारकी की आगति ३ की—उपरोक्त ४ में से स्थलचर नहीं कहना। छठी नारकी की आगति चार की-जलचर और संख्यात वर्षों की आयु वाले स्त्री, पुरुष और नपुंसक की। दूसरी नारकी से छठी नारकी तक गति ६ की—पांच संज्ञी तिर्यंच और संख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य। सातवीं नारकी की आगति ३ की-जलचर, कर्मभूमि का पुरुष और नपुंसक। सातवीं नारकी की गति ५ की—पांच संज्ञी तिर्यंच की।

भवनपति व्यन्तर में १६ की आगति-पांच असंज्ञी, तिर्यंच, पांच संज्ञी तिर्यंच, संख्यात वर्षों की आयुवाला कर्मभूमि मनुष्य, असंख्यात वर्षों की आयुवाला कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि मनुष्य, छप्पन अन्तर्द्वीपों के मनुष्य, स्थलचर युगलिया और खेचर युगलिया। इनकी गति ९ की—पांच संज्ञी तिर्यंच, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय और संख्यात वर्षों की आयु वाला कर्मभूमि मनुष्य। ज्योतिषी और पहले दूसरे देवलोक में ९ की आगति—पांच संज्ञी तिर्यंच, संख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य, असंख्यात वर्षों की आयु का कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि मनुष्य और स्थलचर युगलिया। इनकी गति ९ की भवनपति के अनुसार कहना। तीसरे से आठवें देवलोक में ६ की आगति और ६ की गति-पांच संज्ञी तिर्यंच और

क्तव्य दो' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध पांच आकाश प्रदेश में इस प्रकार रहता है कि समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो और उसके नीचे समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो तथा दोनों श्रेणी के मध्य एक आकाश प्रदेश में दो प्रदेश इस आकार से [चित्र] रहते हैं तब उसमें तेरहवाँ 'चरम दो अवक्तव्य एक' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध छह आकाश प्रदेश में रहता है, समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो, उसके नीचे समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो, ऊपर के आकाश प्रदेश में एक और मध्य भाग के आकाश प्रदेश में एक प्रदेश इस आकार से [चित्र] रहते हैं तब उसमें चौदहवाँ 'चरम दो अवक्तव्य दो' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध छह आकाश प्रदेशों में इस आकार से [चित्र] रहता है तब उसमें उन्नीसवाँ 'चरम एक अचरम एक अवक्तव्य एक' भंग पाता है इसमें बीच का प्रदेश अचरम है उसके चारों ओर के चार प्रदेश पांच प्रदेशी स्कंध में कहे अनुसार 'चरम' है और विश्रेणी में रहा हुआ

एक प्रदेश 'अवक्तव्य' है। जब छह प्रदेशी स्कंध चार आकाश प्रदेशों में इस तरह रहता है कि समश्रेणी स्थित तीन आकाश प्रदेशों में से पहले दो आकाश प्रदेश में दो दो, तीसरे आकाश प्रदेश में एक और विश्रेणी स्थित चौथे आकाश प्रदेश में एक प्रदेश इस आकार से

रहते हैं तब उसमें तेईसवां चरम दो अचरम एक अवक्तव्य एक भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध समश्रेणी स्थित तीन और विश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में इस आकार से रहता है तब उसमें
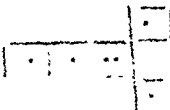
चौबीसवां 'चरम दो अचरम एक अवक्तव्य दो' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध के समश्रेणी स्थित चार आकाश प्रदेशों में से पहले तीन आकाश प्रदेश में एक एक चौथे में दो और विश्रेणी स्थित पांचवें आकाश प्रदेश में एक
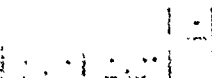
प्रदेश इस आकार से रहते हैं तब उसमें पच्चीसवां 'चरम दो अचरम दो अवक्तव्य एक' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध छह आकाश प्रदेशों में रहते हैं, उसके चार प्रदेश समश्रेणी स्थित चार आकाश प्रदेश में और दो प्रदेश विश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में इस

आकार से रहते हैं तब उसमें छब्बीसवां

क्तव्य दो' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध पांच आकाश प्रदेश में इस प्रकार रहता है कि समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो और उसके नीचे समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो तथा दोनों श्रेणी के मध्य एक आकाश प्रदेश में दो प्रदेश इस आकार से
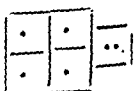
रहते हैं तब उसमें तेरहवां 'चरम दो अवक्तव्य एक' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी स्कंध छह आकाश प्रदेश में रहता है, समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो, उसके नीचे समश्रेणी स्थित दो आकाश प्रदेश में दो, ऊपर के आकाश प्रदेश में एक और मध्य भाग के आकाश प्रदेश में एक प्रदेश

इस आकार से रहते हैं तब उसमें चौदहवां

'चरम दो अवक्तव्य दो' भंग पाता है। जब छह प्रदेशी

स्कंध छह आकाश प्रदेशों में इस आकार से

रहता है तब उसमें उन्नीसवां 'चरम एक अचरम एक अवक्तव्य एक' भंग पाता है इसमें बीच का प्रदेश अचरम है उसके चारों ओर के चार प्रदेश पांच प्रदेशी स्कंध में कहे अनुसार 'चरम' है और विश्रेणी में रहा हुआ

'चरम दो अचरम दो अवक्तव्य दो भंग पाता है।

सात प्रदेशी स्कंध में १, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २१, २३, २४, २५, २६ ये सत्रह भंग पाते हैं। इन भंगों की स्थापना (आकार) नीचे दिया जा रहा है। ऊपर छह प्रदेशी के भंग जैसे समझाये गये हैं उसी तरह इन्हें भी समझ लेना चाहिए।

पहला भंग 'चरम एक' |:: | :| तीसरा भंग अवक्तव्य एक' |·:: ::|,
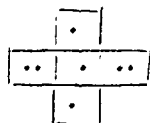
सातवां भंग 'चरम एक अचरम एक'

आठवां भंग 'चरम एक अचरम दो'
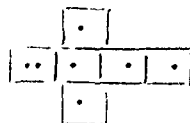
नवां भंग 'चरम दो अचरम एक'
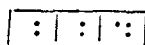
दशवां भंग 'चरम दो अचरम दो'
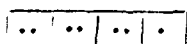
ग्यारहवां भंग 'चरम एक अवक्तव्य एक'
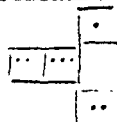
बारहवां भंग 'चरम एक अवक्तव्य दो'
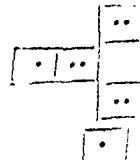
तेरहवां भंग 'चरम दो अवक्तव्य एक'
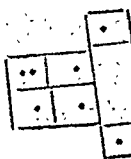
अठारहवाँ भंग 'चरम दो अवक्तव्य दो'

उन्नीसवाँ भंग 'चरम एक अचरम एक अवक्तव्य एक'

बीसवाँ भंग 'चरम एक अचरम एक अवक्तव्य दो'

इक्कीसवाँ भंग 'चरम एक अचरम दो अवक्तव्य एक'

तेईसवाँ भंग 'चरम दो अचरम एक अवक्तव्य एक'

चौबीसवाँ भंग 'चरम दो अचरम एक अवक्तव्य दो'

पच्चीसवाँ भंग 'चरम दो अचरम दो अवक्तव्य एक'
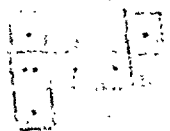
छब्बीसवाँ भंग 'चरम दो अचरम दो अवक्तव्य दो'
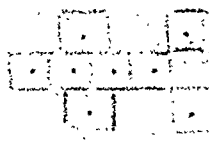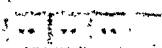
प्रदेश संख्यात गुणा ६ चरमान्त प्रदेश अचरमान्त प्रदेश (सम्मिलित) विशेषाधिक।

संख्यात प्रदेशावगाढ़ असंख्यात प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तीनों अल्पबहुत्व संख्यात प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तरह कहना। असंख्यात प्रदेशावगाढ़ असंख्यात प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तीनों अल्पबहुत्व रत्नप्रभा पृथ्वी की तरह कहना। संख्यात प्रदेशावगाढ़ अनन्त प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तीनों अल्पबहुत्व संख्यात प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तरह कहना। असंख्यात प्रदेशावगाढ़ अनन्त प्रदेशी परिमण्डल संस्थान की तीनों अल्पबहुत्व रत्नप्रभा पृथ्वी की तरह कहना किन्तु इन दोनों अनन्त प्रदेशी परिमंडल संस्थान में संक्रम से अनन्तगुणा कहना चाहिये अर्थात क्षेत्र की अपेक्षा चिन्तन करते हुए जब द्रव्य की अपेक्षा चिन्तन करते हैं तो चरम अनन्तगुणा * कहना चाहिए। परिमण्डल संस्थान की तरह शेष चरों संस्थानों की अल्पबहुत्व कहना।

गई ठिइ भवे य भासा, आणापाणु चरमेय बोद्धव्वा।
आहार भाव चरमे, वण्ण रसे गंध फासे य॥

अर्थ--१ गति चरम २ स्थिति चरम ३ भवचरम

---

* जैसे सबसे थोड़ा एक अचरम, बहुत चरम क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यातगुणा, द्रव्य की अपेक्षा अनन्तगुणा, च[illegible] (सम्मिलित) विशेषाधिक।

४ भाषा चरम ५ श्वासोच्छ्वास चरम ६ आहार चरम ७ भाव चरम ८ वर्ण चरम ६ गंध चरम १० रस चरम ११ स्पर्श चरम।

एक जीव गति पर्याय की अपेक्षा चरम भी है अचरम भी है। बहुत जीव गति पर्याय की अपेक्षा बहुत चरम हैं और बहुत अचरम हैं। इसी तरह २४ दण्डक कह देना चाहिये। गति की तरह शेष १० बोल भी कह देना चाहिये, अन्तर इतना है कि भाषा के बोल में एकेन्द्रिय के पांच दण्डक नहीं कहना चाहिये।